वर्ष २०१४

ब्रह्मावर्त

50 गौरवशाली 50 वर्ष

विज्ञापन प्रसारण सेवा
आकाशवाणी, कानपुर

हिन्दी पखवाड़ा 2014 (पुरस्कार - वितरण)

हिन्दी पखवाड़ा 2014 (हिन्दी - कार्यशाला)

हिन्दी कार्यशाला-माह जुलाई 2014

हिन्दी कार्यशाला-माह जुलाई 2014

विज्ञापन प्रसारण सेवा आकाशवाणी कानपुर के स्वर्णिम 50 वर्ष-स्वर्ण जयंती वर्ष पर
अलंकृत स्टूडियो तथा कार्यालय संकुल

जवाहर सरकार
मुख्य कार्यकारी अधिकारी

सत्यमेव जयते

आकाशवाणी

दूरदर्शन
सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

प्रसार भारती
PRASAR BHARATI
भारत का लोक सेवा प्रसारक
INDIA'S PUBLIC SERVICE BRODCASTER
PTI Building, 2nd Floor, Sansad Marg, New Delhi-110001
Phone : 011-23737603, 23352558 • Fax : 011-23352549
E-mail : ceo@prasarbharati.org • Website : www.prasarbharati.gov.in

सं. प्रभास-29(5)/2012-हि.अनु.

दिनांक 26 अगस्त, 2014

संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि पत्रिका 'ब्रह्मावर्त' का वार्षिक अंक शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है।

हिन्दी एक समृद्ध साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परंपरा की भाषा है। यह लोगों की भाअवनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करने में पूर्ण सक्षम है। हिन्दी भाषा में पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा के प्रचार–प्रसार और विकास की दिशा में किया जाने वाला उत्कृष्ट कार्य है।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएं।

जवाहर सरकार

(जवाहर सरकार)

एफ. शहरयार
महानिदेशक

सत्यमेव जयते

प्रसार भारती
PRASAR BHARATI
भारत का लोक सेवा प्रसारक
INDIA'S PUBLIC SERVICE BRODCASTER
Akashvani Bhavan, Sansad Marg, New Delhi-110 001
Phone : 011-23421300, (O) 23421061 • Fax : 011-23421956
E-mail : fshesheryar@gmail.com • Website : www.allindiaradio.gov.in

सं. प्रभास–09/02/2014–हिन्दी एकक/8603 **दिनांक 22 सितम्बर, 2014**

संदेश

हार्दिक प्रसन्नता है कि आकाशवाणी, कानपुर राजभाषा के व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु गृह पत्रिका 'ब्रह्मावर्त' का प्रकाशन कर रहा है। हिन्दी जन साधारण की आशाओं, आकांक्षाओं, स्वप्नों और आंतरिक विचारों को व्यक्त करने वाली भाषा है। मैं आशा करता हूँ कि राजभाषा हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास के लिए 'ब्रह्मावर्त' का यह अंक निश्चत ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(एफ. शहरयार)

अमिताभ शुक्ला, भा.रा.से.
अपर महानिदेशक (वाणिज्य)

सत्यमेव जयते

प्रसार भारती
PRASAR BHARATI
भारत का लोक सेवा प्रसारक
INDIA'S PUBLIC SERVICE BRODCASTER
विदेश प्रसारण प्रभाग : आकाशवाणी
External Service Division : All India Radio
New Broadcasting House, Room No. 404,
27 Mahadev Road New Delhi-110001
Phone : 011-23421192 • Fax : 011-23421220
E-mail : amitabh63@gmail.com

दिनांक 21 नवम्बर, 2014

संदेश

विज्ञापन प्रसारण सेवा, आकाशवाणी, कानपुर द्वारा अपनी पत्रिका 'ब्रह्मावर्त' अंक का प्रकाशन किया जाना हम सभी के लिए अत्यंत गर्व व हर्ष का विषय है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों, कविताओं, कहानियों एवं संस्मरणों से राजभाषा के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा मिलता ही है साथ ही कर्मचारियों एवं अधिकारियों की रचनात्मक प्रतिभा का विकास भी होता है।

मैं आशा करता हूँ कि 'ब्रह्मावर्त' में सुरूचिपूर्ण एवं उत्कृष्ट पठनीय सामग्री के साथ–साथ आकाशवाणी की अद्यतन गतिविधियों/उपलब्धियों के बारे में भी जानकारी उपलब्ध होगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

(अमिताभ शुक्ला)

डॉ. संजय दुबे
अपर महानिदेशक (प्रशासन)

सत्यमेव जयते

प्रसार भारती
PRASAR BHARATI
भारत का लोक सेवा प्रसारक
INDIA'S PUBLIC SERVICE BRODCASTER
Directorate General : All India Radio
Akashvani Bhavan, Parliament Street, New Delhi-110 001
Phone : 011-23711735 • Mob.: 09810811500
E-mail : sanjaydubey55@gmail.com • Website : www.allindiaradio.gov.in

सं.–09/02/2014–हिन्दी एकक/4195 **दिनांक 15 सितम्बर, 2014**

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि विज्ञापन प्रसारण सेवा, आकाशवाणी, कानपुर गृह पत्रिका 'ब्रह्मावर्त' का प्रकाशन कर रहा है। किसी देश की भाषा उसकी पहचान होती है और हमारे देश की पहचान हिन्दी से है। हिन्दी से देश की जनता को भावात्मक लगाव है। आज हिन्दी सम्पूर्ण विश्व में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। गैर हिन्दी भाषी लोग भी हिन्दी के प्रति आकर्षित होते रहे हैं। हिन्दी अपने आप में सम्पूर्ण भाषा है।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास भी है कि 'ब्रह्मावर्त' अपने नाम को सार्थक करते हुए आकशवाणी, कानपुर के स्टाफ सदस्यों की राजभाषा हिन्दी संबंधी गतिविधियों को पाठकों के समक्ष लाने में रचनात्मक भूमिका का निर्वाह करेगी और कार्यालय के काम–काज में राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने की चिर–प्रतीक्षित अभिलाषा को कार्यरूप में परिणत करने में भी सहायक सिद्ध होगी।

मैं 'ब्रह्मावर्त' के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

(डॉ. संजय दुबे)

ऋचा बैनर्जी
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)

सत्यमेव जयते

प्रसार भारती
PRASAR BHARATI
भारत का लोक सेवा प्रसारक
INDIA'S PUBLIC SERVICE BRODCASTER
Directorate General : All India Radio
Akashvani Bhavan, Sansad Marg, New Delhi-110 001
Phone : 011-23421064

सं.-09/01/2014-हिन्दी एकक/9731 **दिनांक 15 अक्टूबर, 2013**

संदेश

हर्ष का विषय है कि विज्ञापन प्रसारण सेवा, आकाशवाणी, कानपुर 'ब्रह्मावर्त' नामक हिन्दी पत्रिका प्रकाशित कर रहा है। यह पत्रिका साहित्यिक, सामाजिक, शैक्षिक स्तर पर उपयोगी होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। राजभाषा के विकास के लिए इस प्रकार के प्रयास सार्थक होते हैं।

आकाशवाणी, कानपुर के समस्त स्टाफ एवं संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं।

(ऋचा बैनर्जी)

प्रियम्वदा
निदेशक (राजभाषा)

सत्यमेव जयते

प्रसार भारती
PRASAR BHARATI
भारत का लोक सेवा प्रसारक
INDIA'S PUBLIC SERVICE BRODCASTER
Government of India
Ministry of Information & Boardcasting
Shastri Bhawan, New Delhi-110001
Phone : 011-233386226

सं. ई–11017/08/2014–हिन्दी **दिनांक 29 अगस्त, 2014**

संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि आकाशवाणी, कानपुर द्वारा 'ब्रह्मावर्त' नामक गृह पत्रिका के प्रकाशन का शुभारंभ किया जा रहा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि यह केन्द्र राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन के प्रति सजग है एवं इसके विकास के लिए प्रयासरत है।

पत्रिका के प्रकाशन से जहाँ एक ओर विज्ञापन प्रसारण सेवा, आकाशवाणी कानपुर के सदस्यों की साहित्यिक सृजनशीलता को अभिव्यक्ति मिलेगी वहीं हिन्दी के प्रचार–प्रसार को बल मिलेगा।

आशा है पत्रिका में रूचिकर, सूचनाप्रद एवं प्रेरक रचनाएं प्रकाशित की जाएंगी जो कानपुर की गौरवशाली संस्कृति को परिलक्षित करेंगी।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करती हूँ।

(प्रियम्वदा)

डॉ. करुणाशंकर दुबे
सहायक निदेशक (कार्यक्रम)/
केन्द्राध्यक्ष

सत्यमेव जयते

प्रसार भारती
PRASAR BHARATI
भारत का लोक सेवा प्रसारक
INDIA'S PUBLIC SERVICE BRODCASTER

संरक्षक की कलम से

आकाशवाणी कानपुर की विविध भारती सेवा के अविस्मरणीय प्रसारण के 50 वर्ष पूरे होने के साथ पत्रिका 'ब्रहमावर्त' आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।

आकाशवाणी कानपुर की स्थापना 15 सितम्बर 1963 को बेनाझाबर स्थित ब्रजेन्द्र स्वरूप पार्क के सामने पुरानी बिल्डिंग में हुई। इसके वर्तमान भवन का उद्घाटन केन्द्रीय मंत्री श्री आरिफ मोहम्मद खान ने किया था। उस समय यह केन्द्र 1 किलोवाट के मीडियम वेब ट्रान्समीटर के साथ आरम्भ हुआ था जिसका स्टूडियो एवं प्रसारण क्षेत्र एक ही परिसर में था। समय के साथ केन्द्र प्रगति के पथ पर चलता रहा – सन् 1989 में इस केन्द्र को सर्वोत्तम विज्ञापन प्रसारण सेवा का सम्मान वार्षिक आकाशवाणी पुरस्कार के रूप में प्राप्त हुआ। विविध भारती के मनोरंजन तथा ज्ञान से भरे प्रसारण का संगम हुआ एफ.एम. रेनबो के संगीतमयी प्रसारण के साथ जब तत्कालीन सूचना एवं प्रसारण मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्री श्री प्रियरंजन दास मुंशी ने कानपुर में प्रथम एफ.एम. प्रेषित्र का उद्घाटन किया। विविध भारती का प्रसारण भी 2012 में एफ.एम.प्रेषित्र के माध्यम से किया जाना इस केन्द्र के यादगार क्षणों में है।

इस पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा हिन्दी को लेखन का माध्यम बनाना, शासकीय कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देना और रचनात्मकता का विकास करना है।

आशा है यह पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल होगी। इस अंक के लिए जिन आदरणीय महानुभावों के संदेश हमें प्राप्त हुए हैं हम उन सभी का हृदय से आभार प्रकट करते हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के सभी रचनाकारों, सम्पादक–मण्डल तथा प्रकाशन–कार्य से जुड़े सभी सहयोगियों का भी धन्यवाद करते हैं।

आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डॉ. करुणाशंकर दुबे)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	रचनाकार	पृ.सं.
1.	उड़गन की बात निराली..........	डॉ. करुणा शंकर दुबे	1
2.	पिंजरा	डॉ. करुणा शंकर दुबे	2
3.	फेसबुक / वाट्स एप्स : एक नशा	अवधेश्वर सहाय	7
4.	ये आकाशवाणी है	शकुन्तला गौतम	9
5.	ये वाली दुनिया/एक सोच	शोमित मित्रा	11
6.	अनजान समुद्र	आशीष तिवारी	12
7.	रेडियो ; कल आज और कल (रेडियो सफर नामा)	दिव्या श्रीवास्तव	14
8.	राजभाषा हिन्दी : एक विहंगावलोकन	विनोद कुमार मिश्र	19
9.	बेटी/प्रेरणा	डॉ. गरिमा शैलेन्द्र	21
10.	नो ओवर मैसेजिंग प्लीज	मीना मिश्रा	22
11.	अनुशासन का महत्व	रामजी शुक्ला	23
12.	आकाशवाणी में पुस्तकालय का महत्व	राजेन्द्र प्रसाद	24
13.	हिन्दी का भविष्य	राजेश कुमार	26
14.	मनाली	विनीता शुक्ला	27
15.	मैं एक क्लर्क हूँ	देशराज गौतम	29
16.	बेटी बचाओ	कुँवर सिंह	31
17.	स्मृति/लापता	आनन्द कुमार मिश्रा	32
18.	मातृभाषा हिन्दी	सारिका शुक्ला	33
19.	रेडियो के झरोखे से	ओमप्रकाश शर्मा	34
20.	पानी	सत्यम् कुमार सविता	37
21.	हमारा देश	सीमा श्रीवास्तव 'असीम'	38
22.	एकता की बात/परिवर्तन	मालिनी सक्सेना	39
23.	पुरुष का विश्वास	सौरभ त्रिपाठी	40

संपादक मण्डल

संरक्षक

डॉ. करुणा शंकर दुबे, सहा० निदेशक (कार्यक्रम)

परामर्श समिति

श्री अवधेश्वर सहाय, सहा० निदेशक (अभि०)

श्री शोमित मित्रा (कार्य. अधि.)

संपादक मण्डल

श्रीमती शकुन्तला गौतम (कार्य. अधि.)

श्री गौरी शंकर कर्नाटक (वरि. अभि. सहा.)

डा. गरिमा शैलेन्द्र (वरि. उद्.)

श्री रामजी शुक्ला प्र. श्रे. लि.

संपादक

श्री आशीष तिवारी (कार्य. अधि.)

संपादन सहयोग

श्री विनोद कुमार मिश्र (हिन्दी अनुवादक)

श्रीमती विनीता शुक्ला (आशुलिपिक)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे सम्पादक-मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

उड़गन की बात निराली, ढूंढ रहे निशीथ में सारा संसार

डॉ. करुणाशंकर दुबे
सहायक निदेशक (कार्यक्रम)/
केन्द्राध्यक्ष

उड़गन की बात निराली, ढूंढ रहे निशीथ में सारा संसार।
जीव जगत और प्रकृति पुरुष की, महिमा अपरम्पार।।
खनिज, नदियाँ और पहाड़, धरती का आगार।
सूरज चन्दा अहर्निश निगरानी, देते ऊर्जा बारम्बार।।
उड़गन की बात निराली, ढूंढ रहे निशीथ में सारा संसार।

कलियों में मदन क्यारी रसिकन को माली की लगे है मार।
हरियाली वृक्षों का श्रृंगार, सुमनों में भौंरों का गुंजार।।
गगन में पक्षी कलरव करते, मेघ धरा पर करत फुहार।
जूही–चम्पा क्यारी–क्यारी झूमें, लहरायें राजमार्ग कचनार।।
उड़गन की बात निराली, ढूंढ रहे निशीथ में सारा संसार।

ग्रीष्म ताप आतप धूसरित धूर, नदियाँ भई कछार।
पुरवाई की मस्तानी में, लबालब बहै शीतल मंद बयार।।
धान–किसान कहे गेहूँ में हमहूँ, अरहर जीवन करै संवार।
शीत की भीत खानपान से जब्बर, जीव रखे साधु विहार।।
उड़गन की बात निराली, ढूंढ रहे निशीथ में सारा संसार।

सावन–भादों जीवन यौवन संग साथ रहे सदा बहार।
सौमनस्य व्रत ले मनुज, सीख दे मानवता का उद्धार।।
सब जन हो अपना सा जब मिले भाव नमन उपकार।
जीवन खुशहाल रहे, उत्साह उमंगों में रहे सदा सहकार।।
उड़गन की बात निराली, ढूंढ रहे निशीथ में सारा संसार।

पिंजरा

डॉ. करुणाशंकर दुबे
सहायक निदेशक (कार्यक्रम)/
केन्द्राध्यक्ष

शहर के बढ़ते शोरगुल ने बहेलिये को विवश कर दिया था कि वह गांव के उस छोर की ओर शिकार के लिए चल चले, जिधर पंछियों ने अपना बसेरा बना रखा है, आखिर हम जैस शुकों के साथ मजबूरी भी थी, कि हमारागुजर बसर भी वहीं संभव है, जहाँ हमारी क्षुधा शान्त हो सके, क्योंकि सभी पेड़ों पर तो व्यापारियों ने अपना अधिकार बना रखा है। शहरी विक्रेताओं के कब्जे में जो अमरुद है वह हमको मुयस्सर ही नहीं हो सकता, वह अब अखबारी काग़ज़ों में होता है, जहाँ हमारे चोंच की पहुँच ही नही हो सकती है। यहाँ आकर बहेलिया भी वही कर रहा है, जो मैं यहाँ रहकर कर रहा हूँ। मैं तो चिरई गांव में हूँ, यहाँ चन्द्रिका सिंह उपासक का अमरुदों का बगीचा है, स्वयं उपासक जी तो बड़े बौद्ध विद्वान हैं, हम शुकों को उनकी विद्वत्ता से क्या लेना देना, हमें तो उनका शान्त–चित्त रहना ही अच्छा लगता है, क्योंकि हमें तो अपने मतलब के फलों की चिन्ता थी और उन वृक्षों के कोटरों की भी चिन्ता थी, जिसमें हमारा बसेरा था। सब कुछ निःशुल्क यहाँ सुलभ था, हालांकि बहेलिये यहाँ पहले भी आये थे, उनकी आहट कौओं की कांव–कांव से चल पायी थी, किन्तु इस बार तो मेरे ही इलाके में बहेलिये की गंध थी, जाल की महक थी, शायद हम सब पर उसकी निगाह थी, वैसे दीपावली से पहले उल्लूओं की धर–पकड़ होती है। पितरपक से पहले कौओं की धरपकड़ होती है, परन्तु हमारी तो बारहों महीने होती रहती है। शायद हम किसी बंगाली बाबू के घर की समृद्धि के रुप में सराहे जाते हैं, या फिर किसी बेरोजगार पण्डित जी के लिए कामगार ज्योतिर्विद सहायक बनकर पण्डित की स्थापना पं0 तोता राम शास्त्री के रुप में कराते हैं।

चिन्ता यह थी कि आज कोटर से बाहर निकलूं या नहीं निकलूं ? यदि बाहर नहीं निकलता हूँ, तो भूख के कारण अकाल मृत्यु को प्राप्त कर जाऊँगा, यदि बाहर निकलता हूँ तो बहेलिया कोई न कोई उपक्रम करके अपने जाल में पकड़ ले जाएगा।

भोरहरि हो आई, पेट की व्याकुलता और पंख के कसरती स्वभाव ने मुझे कोटर से बाहर निकाल ही दिया, और मैं लकदक भरे कचखरे अमरुद के झुरमुट में बैठने का प्रयास कर ही रहा था कि पहले से उरझे शुकों ने शोर मचाना शुरु कर दिया। मैं बात कुछ समझता, मैं भी उस जाल में फंस गया। अब मामला समझ में आ गया कि बहेलिया तो अमरुदी रंग का परिधान पहन कर उसी पेड़ पर, जाल बिछा कर बैठा था, जो भी पंक्षी वहाँ लालच में बैठता, झट बहेलिया ताना बाना कस देता। पंक्षियों के चीं–चीं करने से पहले वह उसे अपने वश में

कर लेता और अपनी जाली से अपने ढके खोमचे में रख लेता, मैं भी उसी खोमचें में पहले से दुःखी शुकों के साथ शामिल हो गया। आज अमरुद भी न मिला और मेरा विस्तार लिया हुआ चिरई का गाँव अब खोमचे में सिमट गया, जहाँ कुछ दुःखी शुक मात्र थे। इतनी देर में उपासक जी को वहाँ आता देखकर लगा था कि शायद अहिंसा का पाठ वे इस बहेलिये को इस प्रकार पढ़ायेंगे जैसे देवदत्त को तथागत ने पढ़ाया था और यह बहेलिया मुझे छोड़ देगा, किन्तु बहेलिया चालाक था।

उसने उपासक जी के समीप आने से पहले ही उस खेत को छोड़ देने में अपनी भलाई समझी, उसने बस एक काम यह किया कि खेत से बाहर निकलते समय खोमचे के ऊपर एक कपड़ा डालकर उसे ढक दिया। अब उस बहेलिये के पैर किधर, किस दिशा में चल रहे थे, मुझे क्या मेरे साथी शुकों को भी पता नहीं चल पा रहा था। हमारे खोमचे के अन्दर मात्र हल्की रोशनी थी, जिसमें एक शुक दूसरे शुक की आँखें देख सकता था, कोई किसी से बात नहीं कर पा रहा था। सबके कष्ट समान थे, सबका उपचार एक था, परन्तु सबका उपचारक कोई नहीं था। इतने में अहसास हुआ कि हम सब सड़क के किनारे आ गये। यहाँ शहर में चलने वाली गाड़ियों की आवाजें आने लगी थी, अब हमारे खोमचे का आवरण हटा दिया गया था, किन्तु इस समय तक गोधूलि बेला हो चली थी। हमारा खोमचा एक ट्रैक्टर के डाला पर रख कर, बहेलिया भी उसी पर सवार हो गया, हम घड़र–घड़र की आवाज के बीच रेलवे क्रासिंग पार करते आशापुर चौराहे से आगे बढ़े चले जा रहे थे, दोनों ओर सामाजिक वानिकी की हरियाली और बनारस के साहूकारों के बड़े–बड़े खेतों में बने भवनों का ऊपरी भाग दीख रहा था। अब शोर बढ़ने लगा था, लग रहा था, पाण्डेयपुर–पिसनहरियां भी अब आ चुका है, इसके आगे फिर शान्त शोर और शान्ति के बीच, आधुनिकता और ग्रामीण परिवेश के बीच बस यह शहर सभी के मन को मोह लेता है, मुझ जैसे पंक्षी को भी इसी कारण बनारस प्रिय था।

सोचता चला जा रहा था, यकायक बहेलिये ने ट्रैक्टर से खोमचा उतारने की तैयारी शुरु कर दी, यहाँ तो बसों का रेला था, रोशनी तो थी अन्धेरा भी उतना ही था, ट्रैक्टर रूका। हमारा खोमचा खुद बहेलिये ने बस के ऊपर सुरक्षित रख दिया, अब हमें बहेलियां आस–पास कहीं दिख नहीं रहा था, हमारे ऊपर सिर्फ जाल का बंधन था। उसके पार खुला आसमान और उस पर छिटकी हुई तरई थी। हम सब तरई की रातों में कभी–कभार घूमा करते थे। इसमें भटकने का डर रहता है। इसलिए हमारे बुजुर्ग इन रातों में बाहर निकलने के लिए मना करते थे। कहते थे कि जितनी घुप्प अन्धेरी होगी। उतनी ज्यादा तरई की चमक होगी। आज हमारी जिन्दगी में अंधेरा है। तरई चमक रही है।

आज हमें बाहर रहने की मजबूरी है। हम पराधीन है। हमारे ऊपर बंधन हैं, नहीं तो हम

कब के फुर्र हो जाते, हम तारों को पढ़ते जाते थे। मार्ग को समझते जाते थे। आगे शिवपुर, जलालपुर, जौनपुर क्या पीछे छूटता जा रहा है। हवा रास्तों को काट रही है, अब अंधेरे में रोशनी के रास्ते भी कहीं–कहीं देखने को मिलते हैं। यहाँ कुछ अधिक रोशनी है बस ठहर गयी, पीछे से कोई आदमी हमारी बस पर आ रहा है अरे यह तो बहेलिया ही है, उसने हमारे जाल में एक ओर रस्सी ढीली की खोमचे के अन्दर भात बिखेर दिया। वैसे रात में भात खाने की हम सबकी आदत नहीं थी फिर भी हम सब 'भूखा क्या नहीं करता' जीभ के स्वाद को छोड़ पेट की आग को बुझाने लगे, हमें पता ही न चला बहेलिया हमारे पास से कब चला गया और बस कब फिर चल पड़ी, अब हमें लगने लगा था कि बहेलिये में भी मानवता होती है। शायद उसने समय रहते अपने जीवन का सदुपयोग न कर पाने के कारण, इस वृत्ति को अपनाया हुआ है। भूख शान्त हो जाने के बाद दैहिक थकान और निद्रा का दबाव बढ़ने लगा। हम सब न जाने कब सो गये।

मोटर गाड़ियों के पीं–पीं के साथ आदमियों के चहल–पहल की आवाजों ने निद्रा खोल दी तो लगा हम नये शहर के समीप आ पहुँचे हैं, सुबह होने वाली है आसमान से सूरज की किरणें धरती पर पड़ने लगी थी, अब बहेलिया पुनः बस की छत पर आया तो अहसास हो गया कि बस खड़ी है। इतने में उसने अपने खोंमचे को पहले कपड़े से ढका फिर अपने सिर पर रख लिया। हम सब उजले–अंधियाले में स्याह से हो गये। धीरे–धीरे वह बस से उतर कर बढ़ते तेज कदमों से आगे बहेलिया चलता जा रहा था, और हम सब खोमचे के अन्दर, उसके सिर पर फुदकते रहे। थोड़ी भूख भी अब हम पर सवार हो रही थी, इतने में एक शान्त जगह पर पेड़ के नीचे हमारे खोमचे को रखकर बहेलियों ने मिट्टी की लुटिया का जुगाड़ बनाया था। उसके पास पहले से लुटिया थी, इसका पता नहीं परन्तु उसने उसमें पानी भर कर हम सब के बीच में रख दिया, इस काम के लिए तो उस बहेलिये को उतना ही पुण्य मिला होगा, जितना प्यासे को पानी पिलाने का मिलता है।

भीड़ भरे बाजार में बहेलिये के साथ हम सब आ चुके थे, यहाँ पूरी तरह से कोलाहल था, यहाँ एक जगह खोमचा रखा गया, कपड़ा हटाया गया, अब लगा हम तो चिरई गाँव में थे वहाँ तो सब आदमी गमछा पहनकर घूमा करते थे, कोई–कोई तो गांधी टोपी लगाकर यदा–कदा खेतों में दिखता था, यहाँ तो चारखानी लुंगी का माहौल है, होने को तो ये भी इंसान है परन्तु ये बहेलिया बिचौलिया इतनी दूर इन्हें बदनाम करने के लिए हमें क्यों ले आया है। इनके सिर पर तो गोल टोपी भी है, अब समझ आने लगा कि बिचौलिये ही मार–काट कराते हैं। बाजार भाव ऊँचा–नीचा कराते हैं। पर मेरी भाषा बोली समझता कौन है, यहाँ के लोगों के हाव–भाव और बातचीत से समझ में आ गया कि हम लखनऊ के नक्खास में है। यह चिड़ियों का बाजार है। सुना है इस बार पितरपक में कौए कम आये। इस तरह की बात करते हुए एक

उल्लू दूसरे उल्लू से चर्चा कर रहा था। ये उल्लू बड़ी समझ रखते हैं, अब मैं समझ गया मुझे भी मण्डी में बेचा जाएगा, इतने में बहेलिये ने अपने खोमचे को खाली करके मुझे बड़े पिंजरे में रख दिया। हम सब कई थे, थोड़ी देर में छोटे–छोटे पिंजरे आये। एक–एक करके एक पिंजरे में दो शुकों को बसेरा मिला। एक आदम–जात बच्चे के जिम्में हमारे परों की कटाई दी गई। इस तरह से पंख काटे जाते थे कि पिंजरे में दीखने में अच्छा भी लगे, बाजार में कीमत भी अच्छी मिले और उस पिंजरे को खोल देने पर शुक उड़ भी न सके, हालांकि हमें यह मालूम था कि पंख बढ़ते है और फिर उड़ने लायक भी हो सकते हैं पर इसमें थोड़ा समय लगता है। एक के बाद एक करके हमारा भी यही हाल हुआ।

इतने में भगदड़ मचने की आवाज आई, कुछ पंक्षियों को लेकर लोग भाग रहे थे तो कुछ छोड़कर भाग रहे थे, हमने देखा कि कुछ सिपाही दौड़ाकर पंक्षी बेचने वालों की धर–पकड़ कर रहे थे। इतने में एक सिपाही ने हमारा पिंजरा भी अपने कब्जे में ले लिया। उसके हाथ में दो या तीन पिंजरे आ चुके थे। मैं सोच में था, अब मेरा क्या होगा ? कहते है जब दिन फिरते है तो सब बदलता ही चला जाता है पर कहीं अच्छे की एक आस भी बनी रह जाती है। अब हम हरे–लाल रंग की गाड़ी में पिंजरे सहित नयी जगह पर आ पहुँचे, जगह थी बन्दरिया बाग, मुझे क्या पता था कि सब अपनी खुशहाली के लिए यहाँ लाये जा रहे हैं।

यहाँ सभी पिंजरों को बारी–बारी से लाया गया, पंक्षियों को साफ पानी में डुबोनें के बाद कपड़ों से उनकी गीलेपन को हटाकर बागीचों में उड़ने के लिए छोड़ दिया गया, परन्तु हमारी स्थिति तो मुर्गियों जैसी हो गई थी पंख होते हुए भी हम उड़ नहीं सके क्योंकि कुछ समय पहले ही हमारे पंख काट दिये गये थे, अब ऐसा लगने लगा कि हम बिना पिंजरे के भी पिंजरे में है। अब लगा कि ईश्वर ने जो कुछ भी दिया है। हमें उसे सहेज कर रखना चाहिए, उठना–बैठना भी देखकर करना चाहिए। हमने तो लालच से वशीभूत होकर अपना सब कुछ खो दिया। उसे वापस पा लेना दुश्कर है। यह तो हमारे संचित पुण्यों का फल है जो हम इस स्थान पर हैं, परन्तु यह हमारे लिए बिना पिंजरे का पिंजरा है, जहाँ–जहाँ हम अपने लालच का प्रायश्चित कर रहे हैं, यहाँ हमारी सेवा भी होती है इस चिड़ियाघर की प्रधान रेणु सिंह आती है, सबको देखती हैं, हम सबका उपचार करवाती हैं, उनकी ममता हमारी पुष्टता है, मुझे कुछ ही दिनों में लगने लगा था कि अब मैं उड़ने लगा हूँ, वह दिन अब दूर नहीं होगा, जब मैं ऊँची उड़ान भर लूँगा।

आज तो मैं बहुत दूर तक उड़कर वापस आया भी हूँ। अब मुझे तो चिड़ियाघर से चिरई का गाँव भी याद आ गया। मै इस बन्दरिया बाग से निकलकर उस गाँव को जाने की सोचने

लगा, तरई के मार्ग का चिन्तन करने लगा, सोचता रहा अकेले ही जाऊँगा, अमरुद खाऊँगा वहाँ मेरा कोटर है, मेरा बचपन है मेरे संगी साथी है, मेरे उपासक जी है।

रात ही रात शुक तरई के मार्ग का स्मरण करता हुआ चिरई के गाँव के लिए चल पड़ा, जब जहाँ जी चाहा ठहराव लेकर आगे बढ़ जाता उषा प्रहर में आशापुर तक पहुँचने के बाद भटकाव सा लगने लगा, अब शुक को लगा कि पूरी तरह से दिन आ जाय तो बात बनेगी। वह वहीं एक पेड़ के मुंडेर पर बैठकर दिन की प्रतीक्षा करने लगा, पल प्रतिपल भगवान भास्कर ने उसके रास्ते पर रश्मियां बिखेर दी, वह गन्तव्य की ओर चल पड़ा। उसे अमरुद के बगीचे भी दिखे। चिरई के गाँव से चिरई नष्ट हो गई थी। फलों के बागों में कुछ और हो गया। साहूकारों अढ़तियों के अड्डे बन गये। उसका सब कुछ लुटता नज़र आया। वह वहाँ कुछ दिनों तक उपासक जी को खोजता रहा। शुक को शान्त चित्त उपासक जी न मिले। पता चला उनका बेटा सांसद हो गया। आशापुर से पहले पहड़ियां में फलों की मण्डी खुल गयी। अब शुक सीता की रसोई की ओर चला गया। यह ऋषिपत्तन का मार्ग था। यहाँ कजरिया सेठ के फार्म के ऊपर बच्चे एक पिंज़रे में अमरुद रखकर शुक को बुलाने के लिए हांका लगा रहे थे। मैंने सुन रखा था, बनारस शहर के साहूकार सावन में मेले में बहरी अलंग की मौज मस्ती के लिए ये कोठी बनाते हैं। उनके बच्चे शुक पकड़ कर ले जाते हैं, घर के बड़े–बूढ़े उन्हें राम राम करना सिखाते हैं, ताकि जीवन के अन्तिम समय यदि सेठ के घर में सभी के मुँह से रुपया–रुपया निकले तो कम से कम घर में एक जीव तो भगवान को याद कर ले, इसी उधेड़ बुन में शुक ने विचार किया कि वापस चिड़िया घर चला जाय परन्तु जनम भूमि तो काशी है साहूकार के पिंजरे में ही रह लें, जहाँ अन्तिम सत्य राम–राम ही सही।

फेसबुक/ वाट्स एप ; एक नशा

अवधेश्वर सहाय
सहा0 निदे0 (अभि0)

जैसा कि विदित है कि बहुत ही तेज़ गति से तकनीकी विकास हो रहा है। इस तेज रफ़्तार ज़िन्दगी में रिश्तों व दोस्ती की जगह ई–दोस्ती (फेसबुक इत्यादि) ने ले ली है।

एक तरफ हम नई तकनीकी से रू–ब–रू हो रहे हैं। इनके करीब आ रहे हैं। इसका इस्तेमाल कर रहे हैं। वहीं हम अपने दोस्तों परिवार जनों से दूर होकर ई–दोस्ती तक सिमट गए हैं। अब अपने दोस्तों के सुख–दुख में भी फेस बुक, वाट्स एप्स के माध्यम से शामिल हो जाते हैं और उसके सुख–दुख को सिर्फ 30 सेकण्ड में भूल जाते हैं।

इन एप्स का नशा शराब, ड्रग आदि से भी भयंकर है क्योंकि शराब, ड्रग की लत का इलाज सम्भव है पर इसका नहीं। अभी तक इसका कोई एन्टीडोट नहीं बना है। इन मामलों में पत्नी पति एक ही छत के नीचे रहते हुए भी अकेले होते जा रहे हैं। जब भी इस मसले पर परिवार में बात होती है तो यह बात पहले बहस और फिर महाभारत में तब्दील हो जाती है और इसका अंत कभी–कभी किसी जिन्दगी के साथ होता है। यह परिवार व समाज के लिए ठीक नहीं है।

इन ऐप्स से व्यक्ति एक शहर में रहते हुए पूरे विश्व से जुड़ जाता है नये–नये लोगों से दोस्ती/वार्तालाप होता है। जब तक यह बातचीत सभ्य सीमा मे हो तो सूचनाओं का आदान प्रदान होता है। ज्ञान में बढ़ोत्तरी होती है जो कालान्तर में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। लेकिन जब इन ऐप्स पर विकृत मानसिकता की काली छाया पड़ जाए तो आदमी तो टूट ही जाता है कभी भी यह आग परिवार तक तोड़ देती है।

इन ऐप्स पर कई खुराफाती लोग नकली पहचान केवल इसलिए बनाते हैं ताकि वह लोग इसका उपयोग अन्य लोगों को बेवकूफ बनाने, अश्लील वार्तालाप के लिए कर सकें। कुछ लोग महिला के नाम से पहचान बनाकर महिला ग्रुप में प्रवेश कर जाते हैं। जिसका पता उस ग्रुप की महिलाओं को भी नहीं होता। ऐसे लोगों की मानसिकता विकृत होती है। ऐसे लोग सोंचते है कि नकली पहचान से बच जायेंगे। ऐसा नहीं है साइबर क्राइम ब्रान्च ऐसे लोगों को पकड़ सकती है।

ज्यादातर पति–पत्नी भी ऐसे कमेन्ट्स को एक दूसरे को नहीं बताते हैं। इसे दोनों ही आजादी (अलग पहचान) बताते हैं। लेकिन क्या दोनों ने यह सोचा कि अलग–अलग पहचान बताते–बताते आप एक दूसरे से कितना दूर हो रहे हैं। कभी–कभी तो हमेशा के लिए, और चाहकर भी वापस नहीं आ सकते।

यह नशा ऐसा है कि महिलायें दुपहिया वाहन पर अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए अपने मोबाइल/टैब में इन ऐप्स पर मशगूल रहती हैं।

इन ऐप्स पर कई लोग ग्रुप बनाकर वाट्स एप्स इत्यादि पर वार्तालाप करते हैं, इनमें कई महिला ग्रुप भी है। महिला ग्रुप में कई लोग नकली महिला पहचान बना कर घुसे हुए हैं और उन महिलाओं को पता ही नहीं है।

मैं इन ऐप्स का विरोधी नहीं हूँ न ही मैं आप सबको डरा रहा हूँ। इन सबका इस्तेमाल एक हद तक ही ठीक है जब तक परिवार, रिश्तों व खासकर विश्वास का कत्ल न हो। यह एक सलाह है कोई माने अथवा नहीं।

श्रद्धावनत

स्व० श्री प्यारे लाल जी

(21/03/1961–03/07/2014)

समस्त आकाशवाणी कानपुर परिवार

ये आकाशवाणी है

शकुन्तला गौतम
कार्यक्रम अधिशासी

जन प्रसारक के रूप में आकाशवाणी ने देश की सांस्कृतिक एकता बनाये रखने में, सामाजिक व आर्थिक विकास में, सूचना एवं शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। सन् 1925 में तत्कालीन भारत सरकार तथा इण्डियन ब्राडकास्टिंग कम्पनी लिमिटेड के बीच हुए करार के तहत बम्बई जो कि आज मुम्बई तथा कलकत्ता जो कि वर्तमान में कोलकाता शहर है रेडियो स्टेशन की स्थापना हुई थी।

सन् 1936 में दिल्ली में 20 किलो वाट का ट्रान्समीटर लगाकर प्रसारण आरम्भ किया गया। ऐसा माना गया कि मीडियम वेव नेटवर्क के माध्यम से सम्पूर्ण भारत को प्रसारण के दायरे में लाना कठिन था अतः दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता और मद्रास, जो वर्तमान में चेन्नई है, में शार्टवेव के ट्रान्समीटर लगाये गये तथा लखनऊ और त्रिचुरापल्ली में मीडियम वेव से प्रसारण की शुरुआत की गई। अंग्रेजी शासन के दौरान भारत में समान्तर रूप से कुछ सम्राट भी शासनरत थे जिसमें मैसूर, बड़ौदा, हैदराबाद, औरंगाबाद आदि ने भी अपने स्टेट में रेडियो केन्द्र स्थापित किये। यही वह समय था जब प्रसारण सेवाओं का नामकरण 'आल इण्डिया रेडियो' रखा गया। स्वतंत्रता दिवस के पहले, जून में लार्ड माउन्ट बेटेन, पं0 नेहरू और जिन्ना ने प्रस्तावित विभाजन के बारे में रेडियो पर वक्तव्य भी जारी किये थे। 15 अगस्त 1947 की सत्ता के हस्तान्तरण का सजीव प्रसारण आधी–रात को रेडियो पर हुआ और सम्पूर्ण राष्ट्र ने पं0 जवाहरलाल नेहरू के उद्‌गार भी सुने।

जब भारत वर्ष आजाद हुआ तब आकाशवाणी के पास 6 केन्द्र तथा 18 प्रेषित केन्द्रों का नेटवर्क था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद नेटवर्क में तेजी से वृध्दि हुई तथा सरदार वल्लभ भाई पटेल पहले सूचना प्रसारण मंत्री बने जिनके कुशल नेतृत्व में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय बना, उस समय भारत वर्ष में रेडियो सीलोन और बी बी सी को बहुत सुना जाता था अतः सरकार ने श्रोताओं को अपने देश के प्रसारण की ओर रुचि बढ़ाने हेतु विविध भारती सेवा शुरू की।

सन् 1965 से ग्रामीण अंचलों को जोड़ने के लिए आकाशवाणी से ग्रामीण कार्यक्रमों का प्रसारण आरम्भ किया गया। सातवीं व आठवीं पंचवर्षीय योजनाओं के तहत सरकार ने तकनीकी उत्कृष्टता का ध्यान रखते हुए कई एफ.एम.रेडियो चैनलों की स्थापना की।

वर्तमान में आकाशवाणी से राष्ट्रीय स्तर पर कई भाषाओं व बोलियों में प्रसारण किया जा रहा है। एक नवम्बर 1967 को आकाशवाणी से व्यवसायिक प्रसारण सेवाओं की शुरूआत की गई जिसके माध्यम से विज्ञापनों का प्रसारण कर राजस्व संग्रहित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया।

वर्तमान् में आकाशवाणी से प्रसारण के साथ–साथ राजस्व अर्जन भी प्रत्येक केन्द्रों से किया जाता है। प्रसारण की दृष्टि से आकाशवाणी को कई केटेगरी में विभाजित कर दिया गया है। जिसमें प्राइमरी चैनल, लोकल रेडियो स्टेशन, विविध भारती विज्ञापन प्रसारण सेवायें तथा एफ. एम. गोल्ड व एफ. एम. रेनबो सेवा प्रमुख है। तकनीकी के वर्तमान दौर में जहाँ कई प्राइवेट चैनल भी प्रसारण का कार्य कर रहे हैं आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रो से भी कई फोन–इन–कार्यक्रम कम्प्यूटर के माध्यम से इन्टरनेट व फोन से समाचार व संगीत से श्रोताओं का मनोरंजन किया जा रहा है। डी टी एच तकनीक से श्रोताओं को अपने से जोड़ने में भी सफलता हासिल की है। आकाशवाणी ने भारत की सांस्कृतिक विरासत को एक जगह से दूसरे जगह फैलाने में अपनी अहम भूमिका निभाई है और अपने प्रसारण से लोगों में ख़ास तौर से दूरदराज़ के क्षेत्रों में चेतना जगाने का कार्य भी किया, सरकार द्वारा चलाई गई विभिन्न योजनाओं से लोगों को रूबरू कराया। तभी तो यह भारत का लोक सेवा प्रसारक है। इतनी सारी खूबियाँ अपने मे समेटे आकाशवाणी निरन्तर श्रोताओं की सेवा में तत्पर, नयी संस्कृति नयी भाषा और नये समय के साथ अपना तालमेल बनाए हुए है और बहुजन सुखाय बहुजन हिताय के लक्ष्य को पूरा कर रहा है। वर्तमान् में देश में 04 एफ एम गोल्ड 20 एफ एम रेनबो 190 प्राईमरी चैनल लोकल रेडियो स्टेशन तथा 37 विविध भारती केन्द्र कार्य कर रहे हैं।

रायपुर (छत्तीसगढ़), गोरखपुर (उत्तर प्रदेश), रोहतक (हरियाणा) तथा शिमला (हिमांचल प्रदेश), गुलबर्गा (कर्नाटक) अतिरिक्त 05 आकाशवाणी के केन्द्र है जहाँ से विविध भारती विज्ञापन प्रसारण सेवा का प्रसारण किया जा रहा है। हमारे प्रदेश में भी रायबरेली और अमेठी नये आकाशवाणी के नये केन्द्र है जहाँ से कार्यक्रमों का प्रसारण होने लगा है।

आकाशवाणी से श्रोताओं का मनोरंजन तो होता है समाचार भी सुनने को मिलते हैं वही शास्त्रीय संगीत लोकसंगीत और गीत संगीत के कार्यक्रमों से अपनी सांस्कृतिक विरासत को जानने का मौका भी मिलता है। महिलाओं, बच्चों, युवाओं तथा ग्रामीण कार्यक्रम के माध्यम से आकाशवाणी भारतीय जन–मानस में अपनी पैठ बनाये हुए है।

ये वाली दुनिया

शोमित मित्रा
कार्य0 अधि0

आज की ये दुनिया चलती है
फेसबुक, व्हाट्स अप, ट्विटर पर
जादू है इसका ऐसा छाया
सबने इसमें ही सुकून पाया
जान पहचान बनाए इससे
करते मैसेजिंग करते चैटिंग
दुनिया को अपनी ख़बर देते हैं सब
पर अपनों की ख़बर नहीं रख पाते
मायने बदल गये हैं जीने के
'तूफ़ान' है ये ऐसी चली सब कुछ है इसके वश में
बेतार से भी जुड़ जाती है ये 'सोशल' दुनिया,
बदल दी है इसने ज़िन्दगी की चाल
नई दुनिया है ये अब जीने की भी एक नई कला है
तो समझो इसे, सँभालो इसे, सँवारो इसे

एक सोच

सब कुछ होता है इससे
कब होगा, क्या होगा, कैसे होगा, कहाँ होगा.......
इसके रूप हैं अनेक कुछ को हम जान पाते
कुछ से हम अंजान रहते
जीवन के पल हैं इससे
ये 'समय' है वो आईना जो दिख़ाता है सब कुछ
ये समय ही है इस जीव़न की धड़कन
तो इस जीवन के छोटे–छोटे पलों को भी जियें
समय ही बतायेगा कि आपने क्या खोया और क्या पाया
समय जो बीता हुआ है, या जो बीत रहा है।
शायद आने वाले समय का आधार भी यही है
ये तो समय ही बतायेगा.....

अनजान समुद्र

आशीष तिवारी
कार्यक्रम अधिशासी

पूर्वी कमान का कोई अनजान समुद्री क्षेत्र। तापमान 32^0 सेन्टीग्रेड, आर्द्रता 70 प्रतिशत, हवा का बहाव 7 किमी दक्षिण पूर्व। आकाश में तैरते हुए बादल और नीचे 360^0 को फैला, क्षितिज तक जाता हिन्द महासागर का अथाह जल। इस चाँदी की चमकती जल परत पर दूर नीचे तमाम लकीरें हैं जो तमाम छोटे–बड़े युद्ध पोतों ने बनाई है जो भारत–अमरीका संयुक्त युद्ध अभ्यास में भाग ले रहे हैं। मैं एक मौसम विज्ञानी की हैसियत से इस अभ्यास का एक छोटा सा हिस्सा हूँ जो एक अमरीकी अवाक्स (एयर फोर्स वार्निंग एण्ड कन्ट्रोल सिस्टम) विमान पर सवार हूँ। इस विमान का मुख्य चालक है हरदम

मुस्कुराता एडम स्टाइन बर्गर, सह चालक है बज यानि टाम निकोलस यानि चुटकुलों का महारथी और मेरा सहकर्मी चार्ली मानी चार्ल्स वाटसन कुछ–कुछ गम्भीर और शान्त। मैं मौसम के चेहरे पर और उन सभी उड़ती चीजों पर जिनकी पूँछ पर तिरंगा या स्टार एण्ड स्ट्राइप्स न हों नजर रखने का काम कर रहा हूँ। सारे पैरामीटर देर रात तक मौसम के मिजाज पर कोई बड़ा बदलाव का संकेत नहीं दे रहे हैं। इस भारी–भरकम विमान की दबी–दबी झनझनाहट एक हल्का सा आलस पैदा कर रही थी। मेरी नजर सामने पैनल पर से तैरते हुये न जाने क्यों दायीं तरफ के छोटे से झरोखे से बाहर गयी और अचानक सब कुछ शान्त हो गया।

आँखे खोलने का प्रयत्न करते हुए मैंने पाया कि सामने की हल्की पीली सी रोशनी है। मेरे आँखे फोकस नहीं कर पा रही थीं। सब कुछ धुँधला प्रतीत हो रहा था। काले में एक अजीब सी शांति का आभास था। कुंछ–कुछ वैसे जो तरणताल की गहराई में अनुभव होती है। तभी कुछ गूँजती हुई सी आहट हुई। सामने से चार आकृतियाँ हिलती हुई सी मालूम हुईं। फिर लगा कि कोई बोल रहा है। भाषा और बोली समझ से परे थी। पर उसमें ताकत और पद की अनुभूति थी। फिर कुछ शोर के साथ गड्ड–मड्ड होती हुई आवाज स्पष्ट और समझ में आने वाली बोली में बदल गयी। "तुम लोग कभी लड़ाई बन्द नही करोगे। लगता है दुनिया खत्म करके ही मानोगे।" आवाज में खीज का स्वाद था। मैं अन्जाने ही बोल पड़ा, "हम लड़ने नहीं जा रहे हैं। यह केवल अभ्यास है।" कुछ सेकेन्डो की नीरवता के बाद आवाज फिर

आई, उसमें खीज की सान्द्रता निश्चित तौर पर बढ़ी हुई थी– ''लड़ने का अभ्यास, लड़ने की तैयारी ही तो है। हम आधी दुनिया का चक्कर लगा कर यहाँ आये हैं, शान्ति से रहने, पर तुम सब एक जैसे हो। छोटे–छोटे स्वार्थों के लिए एक दूसरे की गर्दन काटने वाले। एन्टलाटिस शांत सम्भ्यता है पर...'' और चेतावनी के पुट के साथ ही फिर वही नीरवता छा गई। पर अब यह और विचलित कर रही थी। पलकों के सामने से रोशनी गायब होने लगी, कुछ सेकेन्ड ऐसा ही रहा और जब फिर रोशनी आयी तो मैं फिर उसी विमान में उसी पैनल के सामने अपने को पा रहा था।

———— ● ————

दूर पश्चिम में सूरज अस्त होते हुए आकाश को अनगिनत लाल–नारंगी रंगो से भर रहा था। मैं जैसलमेर के किले की बाहरी दीवार पर बैठा था। सामने चार्ली मूँगफली के दाने गटक रहा था। हम उस सैन्य अभ्यास के बीस साल बाद पहली बार मिल रहे थे। तमाम इधर–उधर की बाते हो रही थी। मन में तो वह घटना हिल–डुल रही थी, जो अब तक मैने किसी को नहीं बताई थी। ''चार्ली, मैं एटलांटिस....'' चार्ली की आखों में एक शरारती चमक आई। और उसने अपने होठों पर ऊँगली रखकर शान्त रहने का इशारा किया। मैं समझ गया मैं वहाँ अकेला नहीं था। वह भी मेरे साथ था। चार्ली बोला ''दोस्त उनको शांति से रहने दो, दीवारों के भी कान होते हैं और ये दीवार तो काफी लम्बी चौड़ी है।''

———— ● ————

गुलामी से भी शर्मनाक है–दास होने की चेतना का नष्ट हो जाना। आज हम मानसिक और वैचारिक–दोनों स्तरों पर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के दिनों से भी जड़ता की स्थिति में पहुँच चुके हैं, तो इसलिए कि जिस देश में लोगो मे झूठ को झूठ कहने का नैतिक साहस नष्ट हो जाए, सच को सच कहने की ताब भी नहीं रह जाती। यह हिन्दी नहीं, देश का दुर्भाग्य है कि तथाकथित स्वाधीनता की प्राप्ति के बाद सत्य सिर्फ राजभवनों की तख्तियों में जड़े जाने की वस्तु रह गया और सत्य का मुँह ''सत्यमेव जयते'' की स्वर्ण–पट्टिकाओं से दाब दिया जा चुका है।

- साहित्यकार शैलेश मटियानी

रेडियो-कल आज और कल
रेडियो सफ़रनामा

दिव्या श्रीवास्तव
अभि0 सहा0

रेडियो, हमारे आपके हम सभी के जीवन का हिस्सा रहा है। अपने प्रारम्भिक दौर में यह ऐसा नहीं था जैसा आज हम इसे जान रहे हैं। इसने अपनी प्रगति के सफ़र में बहुत से क्रान्तिकारी व नूतन आयामों को तय किया है। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में इटली के एक वैज्ञानिक गुगलीनों मारकोनी ने रेडियो तरंगो की दिशा में सर्वप्रथम गंभीरता पूर्वक प्रयास शुरू किए। उन्होनें सन् 1885 में सर्वप्रथम 'बेतार संकेत' को विद्युत चुंबकीय तरंगो (Electromagnetic Waves) द्वारा प्रसारित करके सुना। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान सैनिक संचार और प्रचार के लिए रेडियो का खुलकर इस्तेमाल हुआ, लेकिन पूरे विश्व में युद्ध के उपरान्त ही प्रसारण युग का सूत्रपात हुआ। दुनिया में रेडियो का प्रथम नियमित प्रसारण केन्द्र सन् 1920 में पीट्सबर्ग अमेरिका में प्रारम्भ हुआ। उधर इंग्लैण्ड में जी.एल. मारकोनी ने 23 फरवरी 1920 को चेम्सफोर्ड इंग्लैण्ड से अपने पहले रेडियो कार्यक्रम का सफलतापूर्वक प्रसारण किया। कुछ ही सालों में देखते ही देखते दुनिया भर में सैकड़ों रेडियो स्टेशन ने काम करना शुरू कर दिया।

इसी क्रम में सन् 1922 में ब्रिटेन में बी.बी.सी. (ब्रिटिश ब्राडकास्टिंग कार्पोरेशन) और अमेरिका में सी.बी.एस. और एन.बी.सी. जैसी सरकारी रेडियो स्टेशनों की शुरूआत हुई। सन् 1936 में भारत में सरकारी इम्पीरियल रेडियो ऑफ इण्डिया की शुरूआत हुई जो आजादी के बाद "आल इण्डिया रेडियो" या "आकाशवाणी" बन गया। सन् 1947 तक आकाशवाणी के पास छह रेडियो स्टेशन थे। आजादी के बाद भारत भर में कई रेडियो स्टेशनों का बड़ा नेटवर्क तैयार हुआ। पच्चास के दशक के उत्तरार्द्ध में आकाशवाणी के प्राइमरी चैनल देश के सभी प्रमुख शहरों में सूचना तथा शिक्षा की जरुरतें पूरी कर रहे थे। आजादी के समय आकाशवाणी की पहुँच केवल 7–11 प्रतिशत लोगों तक ही थी, जो कि आज लगभग 100 प्रतिशत की सीमा को छू रही है।

रेडियो के विस्तार का अनवरत सफर चलता रहा। साठ के दशक में टेलीविजन के आविष्कार का कारवां थोड़ी देर के लिए रूक गया। टेलीविजन के आगमन के बाद शहरों में रेड़ियो के श्रोता भी कम होते गए। परन्तु समय के साथ अपने आप को बदलने की कला रेडियो से अनभिज्ञ नहीं थी। अपने इस यात्रा में कुछ नवीन कर के रेडियो सदा श्रोताओं के दिलों में राज करता रहा। ये फिल्म संगीत का सुनहरा दौर था।

फिल्म जगत के तमाम कालजयी संगीतकार एक से बढ़कर एक गीत तैयार कर रहे थे।

उन दिनों श्रीलंका ब्राडकास्टिंग कार्पोरेशन की विदेश सेवा जिसे हम रेडियो सिलोन के नाम से जानते हैं; हिन्दी फिल्मों के गीत बजाती थी और प्रायोजित कार्यक्रमों के जरिए तहलका मचा रही थी। ऐसे में आकाशवाणी ने अपने पिटारे से एक अनोखी मनोरंजन सेवा की परिकल्पना की। इसे नाम दिया गया ''विविध भारती सेवा''–आकाशवाणी का पंचरंगी कार्यक्रम यानी पांच ललित कलाओं का समावेश। 3 अक्टूबर 1957 को विविध भारती सेवा मुम्बई से शुरू की गई। यह सेवा कल्पनाओं और आकांक्षाओं से कहीं आगे निकल कर अत्यन्त लोकप्रिय हुई। इसकी लोकप्रियता में आज भी निरन्तर वृद्धि हो रही है। सन् 1967 से विविध भारती पर विज्ञापन प्रसारण सेवा का आरम्भ हुआ। विज्ञापन दाताओं को विविध भारती एकमात्र ऐसा माध्यम लगा जिसके जरिए वह देश के कोने–कोने तक पहुँच बना सके।

बदलते समय के साथ रेडियो प्रसारण की तकनीकी गुणवत्ता को बेहतर बनाने के प्रयास चलते रहे। प्रारम्भ में रेडियो "AM-एम्पीट्यूड माड्यूलेशन'' तकनीक पर कार्य करता था। AM का प्रसारण 550–1650Khz (किलो हर्ट्ज) की आवृत्ति बैण्ड में किया जाता था जिसे मीडियम वेब बैण्ड कहते हैं। AM तकनीक में एक चैनल का दूसरे चैनल से 9KHz का अंतर होना आवश्यक है। AM तरंग वातावरण में मौजूद बिजली तूफानों (जो वायुमंडलीय प्रक्रियाओं और शुष्क हवा के संयोजन से बनता है) तथा विद्युत चुंबकीय हस्तक्षेप (Electromagnetic Interference) से प्रभावित हो जाती हैं, जिसके चलते अनचाहे शोर (Noise) के कारण ये पूर्णतया स्पष्ट नहीं रह जाती है। इसके अतिरिक्त AM की श्रव्य सीमा (Band width) 200 hz-5Khz है जो कि वार्ता के लिए पर्याप्त है संगीत के लिए इसके Band width में सुधार की आवश्यकता थी।

रेडियो ने अपने इस कमी को भी दूर किया। आज कल की बहुचर्चित एवं बहुप्रचलित एफ.एम. (FM) Frequency Modulation) तकनीक रेडियो को स्पष्ट एवं स्टीरिओ प्रंसारण देने में काफी हद तक कामयाब रही है। FM का बैण्ड 88-108 Mhz (मेगा हर्ट्ज) है तथा चैनल सेपरेशन 200 Khz (+- 75 Khz सिग्नल विचलन) है। एफ.एम. की श्रव्य सीमा (Audio Range) 30 Hz-15Khz है। जिसके चलते हम संगीत की सभी बारीकियों का भरपूर आनन्द उठा सकते हैं। इसके अतिरिक्त एफ.एम. की बेहतर Sound Fidelity तथा Stereo प्रसारण ने जैसे श्रोताओं को मोहित कर लिया। एफ.एम. रेडियो के आगमन के बाद अब शहरों में भी रेडियो के श्रोता बढ़ने लगे। इस बीच आम जनता को रेडियो स्टेशन चलाने की अनुमति के लिए सरकार पर दवाब बढ़ता रहा और 1995 में भारतीय उच्च न्यायालय ने कहा कि रेडियो तरंगो पर सरकार का एकाधिकार नहीं है। सन् 2002 में सरकार ने शिक्षण संस्थाओं को कैंपस रेडियो स्टेशन खोलने की अनुमति दी। इसे रेडियो जैसे जन माध्यम के लोकतंत्रीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना गया। सन् 1993 में आकाशवाणी पर चौबीस घंटे प्रसारण

की सेवा दी गई जिसे ''एफ.एम. रेनबो'' कहा गया। यह सेवा देश के आधा दर्जन महानगरों में शुरू करी गई। इसमें फिल्म संगीत से लेकर, टॉक शो, फोन–इन आदि अनेक कार्यक्रमों का अनूठा मिश्रण था। इस सशक्त माध्यम में भारत की आम जनता भी भागीदारिता माँग रही थी। इसी क्रम में सन् 1999 में सरकार ने देश के 40 शहरों में 150 निजी एफ.एम. रेडियो स्टेशनों को मान्यता प्रदान करी। इस समय भारत में लगभग 200 से ज्यादा एफ.एम. स्टेशन हैं। इसके अलावा अनेकों सामुदायिक रेडियो स्टेशन भी सरपट दौड़ रहे हैं। समय के साथ एफ.एम. श्रोताओं के मित्र में कुशलता पूर्वक अपनी जगह बनाने में कामयाब रहा है।

समय के साथ नित्य नए विकल्पों, संभावनाओं को तलाशता हुआ रेडियो संचार के आधुनिकतम माध्यमों में अपने वर्चस्व एवं महत्व को सर्वत्र कायम रखने में कामयाब रहा है। रेडियो अपनी विकास यात्रा के स्वर्णिम सोपानों को स्पर्श करता हुआ यहाँ तक पहुँचा हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से यह प्रमाणित है कि रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का श्रोताओं पर सबसे तेज प्रभाव पड़ता है। भारत जैसे देश में जहाँ आज भी 80 प्रतिशत जनसंख्या गाँवो में निवास करती है वहाँ रेडियो ही सूचना एंव मनोरंजन का प्राथमिक साधन है। रेडियो भी अपने प्रिय श्रोताओं के वर्ग की विविधता के दृष्टिकोण से अपने कार्यक्रमों का निर्माण एवं प्रसारण करता है। प्रायः प्रत्येक गाड़ी, मोबाइल में हम लोगों को साधारण रूप से रेडियो सुनते हुए देख सकते हैं। इसका कारण यह भी है कि हम जब टेलीविजन देखते हैं। हमें पूर्ण रूप से उसके साथ उपस्थित रहना पड़ता है जबकि रेडियो इसका अपवाद है। हम रेडियो को सुनते हुए और भी अन्य कार्य संपादित कर सकते हैं।

आज का युग डिजिटलीकरण एवं इंटरनेट का युग है। यह दोनों तकनीकें मिलकर प्रसारण बाजार को मौलिक रूप से बदलने का दम रखती है। आज हम मनोरंजन के लिए सिर्फ टी.वी. रेडियो, पत्रिका, समाचार पत्र पर ही निर्भर नहीं है। बल्कि आज अनेको ऐसे विकल्प जैसे वीडियो गेम, वेब बेस्ड कान्टेन्ट, रेडियो पॉडकास्ट आदि हैं जो पारम्परिक प्रणाली को प्रतिस्पर्धा दे रहे हैं। समाचार, सूचना, मनोरंजन को प्राप्त करने हेतु विभिन्न पायदान तथा प्रारूप उपलब्ध हैं। फलस्वरूप एक ऐसे श्रोता का उदय हो रहा है जो पिछली परम्परा से अलग अधिक जानकार, सक्रिय, भागीदार व स्वतन्त्र है। मीडिया का यह उभरता रूप पुराने पारम्परिक ढाँचे को चुनौती देने का दम रखता है। रेडियो को सजग प्रहरी की भांति आने वाले चुनौतियों का विवेकपूर्वक तथा सटीक रणनीति से सामना करना होगा।

इंटरनेट रेडियो, वेब रेडियो, स्ट्रीमिंग रेडियो, ऑन लाइन रेडियो यह सभी नाम उस श्रव्य (Audio) सेवा के हैं जो इंटरनेट के माध्यम से प्रसारित की जाती है। विश्व के विकसित देश इस दिशा में पहल कर चुके हैं तथा वहाँ का पारम्परिक रेडियो अपने को श्रोताओं के माँग

के अनुसार बदल रहा है तथा अबतक यह बाजार तथा श्रोताओं में अपनी पैठ बना चुका हे। इंटरनेट रेडियो की शुरूआत सन् 1993 में "कार्ल मालामड" द्वारा "इंटरनेट टॉक रेडियो" कार्यक्रम से शुरू की गई जो कि दुनिया का पहला कम्प्यूटर रेडियो टॉक शो था। इस शो में प्रत्येक सप्ताह एक कम्प्यूटर विशेषज्ञ से बातचीत करी जाती थी। 07 नवम्बर 1994 को 89.3 Fm, Chapell Hill, NC, USA का ऐसा पहला पारम्परिक रेडियो स्टेशन बना जिसका प्रसारण इंटरनेट तथा रेडियो तरंगो पर साथ–साथ किया गया। वैश्वीकरण के युग में श्रोताओं की यह चाहत बन रही हे कि वे दुनिया के किसी भी कोने से कोई भी रेडियो चैनल का आनंद ले सकें। वैश्वीकरण (Globalisation) का ऐसा अनूठा उदाहरण निःसंदेह ही प्रशंसनीय है। उदाहरणार्थ हम यूरोप या भारत में बैठे–बैठे रेडियो आस्ट्रेलिया के कार्यक्रमों का आनन्द ले सकते हैं। इंटरनेट रेडियो की आधारभूत सेवा में लगभग 2.5 Mega Bit/Sec की ब्राडबैण्ड स्पीड की आवश्यकता होती है तथा स्ट्रीमिंग तकनीक के सुचारु रूप से कार्य करने हेतु विशेष Client Browser या Plug-in-Software की आवश्यकता होती है। Streaming तकनीक से आडियो को डिजिटल प्रारूप में बदल कर एक निरन्तर आते हुए धार (Stream) की भांति स्थापित लोकल नेटवर्क पर TCP (Transfer Control Protocol) या UDP पैकेट की मदद से भेजा जाता है। यह Stream श्रोताओं के इंटरनेट रेडियो सेट या कम्प्यूटर पर उपलब्ध होता है। Receiving (ग्रहण छोर) End पर इन पैकेटों को पुनः जोड़ कर वास्तविक ऑडियो सिग्नल का निर्माण किया जाता है। Streaming आडियो प्रारुप (Format) MP3, Vorbis, Real Audio, AAC Plus है। Tune In एप्लीकेशन साफ्टवेयर के जरिए हम अपने कम्प्यूटर, स्मार्ट फोन, टेबलेट तथा अन्य डिजिटल उपकरण पर रेडियो सुन सकते हैं। Streaming तकनीक पारम्परिक रेडियो की ही भांति अनवरत चलती है। पॉडकास्टिंग में इसके विपरीत पहले हमें फाइल डाउनलोड करनी होती है। जिसके उपरान्त हम इसे सुन सकते हैं। अमेरिका में 2003 में Streaming म्यूजिक रेडियो ने 49 million US डालर का व्यापार किया जा 2006 में बढ़कर 500 million US डालर हो गया। एक सर्वेक्षण के अनुसार 23 प्रतिशत अमेरिकी इंटरनेट रेडियो को सुनते हैं। रेडियो विकास के क्रम में Satellite रेडियो का भी नाम जुड़ गया है। सेटेलाइट रेडियो सेवा उपग्रह (Satellites) के माध्यम से श्रोताओं के कार या घर में लगे उपकरण पर ऑडियो सिग्नल उपलब्ध करवाता है। इसका प्रसारण प्रायः पूरे देश तथा समस्त भौगोलिक क्षेत्र में उपलब्ध रहता है। इसकी पहुँच जमीनी प्रेषित्रों से कहीं अधिक होती है। तीन सैटेलाइट का उपयोग कर के समस्त विश्व में अपना प्रसारण उपलब्ध करवाया जा सकता है। विदेशों में प्रचलित यह सेवा मासिक सदस्यता शुल्क पर प्राप्त होती है। यह एक साथ अनेकों रेडियों चैनलों के द्वार खोल देती है। इसकी शुरूआत सन् 2002 में अमेरिका में साइरस सैटेलाइट रेडियो तथा 2005 में XM सैटेलाइट रेडियो, कनाडा द्वारा हुई। इसका प्रसारण S-Band में 2-3 Ghz (गीगा हट्र्ज) में होता है। इस प्रणाली में ग्राउन्ड स्टेशन Satellite को सिग्नल भेजते (Uplink) करते हैं। Satellite पृथ्वी की सतह से 22000 मील दूर पृथ्वी की गति

से पृथ्वी की परिक्रमा करते हैं। Satellites इन तरंगो को पुनः पृथ्वी पर वापस (Downlink) भेजते हैं। इस सिग्नल में अनेकों चैनल का कन्टेन्ट तथा मेटा—डेटा (सूचना) भी समाहित होता है। इस सिग्नल को Satellite Receiver Decode करते हैं चैनल सुनने के लिए उपलब्ध करवाते है। इस प्रणाली की Coverage तथा तकनीकी गुणवत्ता बेजोड़ है। इसकी बढ़ती लोकप्रियता के चलते Satellite Radio कम्पनियां रेडियो चैनल के साथ—साथ होटलों, रेस्तरां, एयरलाइन्स के लिए मुफ्त पार्श्व (Background) संगीत भी उपलब्ध करवाती हैं। लगभग सभी आधुनिक प्रतिष्ठित मोटर कम्पनियां अपनी कारों में सैटेलाइट रिसीवर के साथ उपभोक्ताओं को कारें उपलब्ध करवा रही हैं।

हमारे प्रतिदिन का साथी रेडियो, हमारे जीवन को सूचना, समाचार तथा मनोरंजन के अथाह भण्डार से सजा रहा है। श्रोता और रेडियो के आपसी रिश्ते को मनभावन बनाने हेतु इस आपसी सहयोग का समय—समय पर आकलन सोशल नेटवर्किंग साइट जैसे फेसबुक, ट्वीटर से लिया जा सकता है। इन पर ऑन लाइन फार्म उपलब्ध कराये जा सकते हैं। जिससे इस आपसी रिश्ते को और दृढ़ तथा अनूठा बना सकें। एक ऐसा मंच जहाँ श्रोता उपभोक्ता एंव निर्माणकर्ता दोनों का कार्य संपादित कर सके। श्रोता, निर्माणकर्ता और तकनीकी विशेषज्ञ इन तीनों अंगों का पूर्ण समन्वय तथा सामन्जस्य स्थापित हो सके। रेडियो निरन्तर बदल रहा है तथा समय के अनुसार इसे अपने में नित्य नए आयामों को जोड़ना होगा। इस बदलाव को सकारात्मक दिशा की ओर ले जाना हमारी, आपकी हम सभी की साझा जिम्मेदारी है। आइए हम सभी यह प्रण करें कि इस सामाजिक संस्था तथा सांस्कृतिक उपक्रम को ऐसा सशक्त माध्यम बनाए जो भविष्य में आने वाली सभी चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर सके तथा बहुजन—हिताय, बहुजन—सुखाय का परचम लहरा सके।

मैं सुनता हूँ कि भारत में सुशिक्षित आदमी उसे कहते हैं जिसे अंग्रेजी अच्छी आती हो और अंग्रेजी बोलना पसंद करता हो, जिसके घर अंग्रेजी किताबों का संग्रह हो और अंग्रेजी अखबार आता है परन्तु अन्य देशों में सुशिक्षित आदमी उसे कहते हैं जिसे अपनी भाषा का पर्याप्त ज्ञान हो, जिसके घर में राष्ट्रभाषा की पुस्तकों का संग्रह और जिसे मातृभाषा का जटिल साहित्य पढ़ने में विशेष रुचि है।

- योहिच युकिमुता (प्रसिद्ध जापानी साहित्यकार)

राजभाषा हिन्दी : एक विहंगावलोकन

विनोद कुमार मिश्र
हिन्दी अनुवादक

14 सितम्बर 1949 से संविधान में हिन्दीं को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया जाना हिन्दी कि लिए गौरवपूर्ण मायने रखता है। लेकिन हिन्दी आज भी अपनी वास्तविक प्रतिष्ठा हेतु संघर्षरत है। क्यों ? क्या हिन्दी देश के संपूर्ण हिस्से को भाषा के रूप में आच्छादित करने की क्षमता नहीं रखती है ? उसका जगह–जगह विरोध क्यों होता है? ये प्रश्न हमें बेचैन करते हैं। वास्तविकता यह है कि हिन्दी भारत की एक मात्र ऐसी भाषा है जो भारत के कोने–कोने में समझी जाती है। इस संदर्भ में गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर का कथन दृष्टव्य है– ''उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए जो देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती है अर्थात हिन्दी।'' एक अन्य विद्वान् सुब्रह्मण्यम भारती ने भी कहा है, ''राष्ट्र की एकता को यदि बनाकर रखा जा सकता है तो उसका माध्यम हिन्दी ही हो सकती है।'' इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि हिन्दी को समग्र राष्ट्र की एक केन्द्रीय भाषा के रूप में स्वीकार्यता पर मुहर भारत के हर क्षेत्र के विद्वानों और मनीषियों ने लगाई है। इस स्वीकार्यता से ही हिन्दी की ताकत को समझा जा सकता है।

वस्तुतः हिन्दी आज ही नहीं, बल्कि अपने उद्भव के समय से ही पूरे राष्ट्र को केवल भाषायी स्तर पर ही नहीं, बल्कि सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्तर पर भी, एकता के सूत्र में बाँधने वाली कड़ी रही है। मध्यकालीन इतिहास का अवलोकर करने पर जानकारी होती है कि हर वर्ग के, हर धर्म के इतिहासकारों, साहित्यकारों और साधु–सन्तों ने अपनी अभिव्यक्तियों को व्यापक आयाम प्रदान करने हेतु इसी भाषा का सहारा लिया। जायसी, रहीम, तुलसीदास, कबीरदास प्रमुख उदाहरण है। इनसे पूर्व में हिन्दी भाषा के उन्नयन में अमीर खुसरो के योगदान को कैसे भूल सकते हैं ?

स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान तो हिन्दी ही एकतात्र ऐसी भाषा थी जिसका उपयोग हर प्रान्त के राजनेता और आन्दोलनकारियों ने राष्ट्रीय अलख जगाने हेतु किया। गैर हिन्दी भाषी प्रान्तों के – बाल गंगाधर तिलक, गोपालकृष्ण गोखले, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, महात्मा गाँधी, सुब्रह्मण्यम् भारती, बंकिम चन्द्र चटर्जी, आचार्य विनोबा भावे, रेहाना तैय्यब जी, आदि विद्वानों और राजनीतिज्ञों ने राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दी के महत्व को समझते हुए; इसी को स्वतंत्रता आन्दोलन में भाषायी माध्यम बनाया।

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट होता है कि हिन्दी की राष्ट्रीय स्वीकार्यता इसके उद्भव

काल से ही रही है। ऐसा अनायास ही नहीं रहा है। वास्तव में, हिन्दी भाषा ही भारतवर्ष की एकमात्र ऐसी भाषा रही है जिसमें सर्वाधिक समावेशन और समाहार–शक्ति रही है। इसमें अन्य भाषाओं के शब्दों के आत्मसातीकरण की शक्ति, किसी भी अन्य भाषा की तुलना में अधिक है। इस आत्मसातीकरण के बावजूद हिन्दी ने अपनी मौलिकता और सशक्तता को अक्षुण्ण रखा है। वास्तव में इसका यही गुण भारत की सामासिक संस्कृति को भी घोतित करता है।

आज के भारतवर्ष में भी हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो सम्पूर्ण देश के कोने–कोने में समझी जाती है। हिन्दी के तथाकथित धुरविरोधी प्रान्तों में भी इस भाषा को समझने वाले हैं। वस्तुतः पूरे राष्ट्र की संपर्क भाषा के रूप हिन्दी ही प्रतिष्ठित है। यहाँ जार्ज अब्राहिम ग्रियर्सन का यह कथन विचारणीय है – ''हिन्दी ही एकमात्र भाषा है जो भारत में सर्वत्र बोली और समझी जाती है।''

भाषा के रूप में उपरोक्त असीम शक्ति रखते हुए भी हिन्दी का राष्ट्र भाषा के रूप में विरोध क्यों ? कारण केवल 'राजनीतिक' समझ में आता है। किसी भी सर्वमान्य और सर्वग्राह्य भाषा का इस प्रकार का विरोध कदापि उचित नहीं है। हिन्दी ने किसी भी भाषा का कोई विरोध नहीं किया है; सभी भाषाओं का समन्वय करते हुए यह आगे बढ़ी है। यही इसकी खूबी और मौलिकता है जो इसे अन्य भाषाओं पर वरीयता प्रदान करती है। यहाँ दक्षिण भारतीय न0 ई0 मुट्टूस्वामी का कथन अवलोकनीय है– ''तमिलनाडु में हिन्दी–बिरोध कुछ लोगों का फैशन है।'' वास्तव में इस प्रकार के फैशनवादी विरोधियों को यह समझना पड़ेगा कि वह जितना ही हिन्दी का विरोध करेंगे; हिन्दी उतनी ही सबल और समृद्ध होगी। उन्हें यह भी समझना होगा कि हिन्दी ने किसी भी प्रान्तीय भाषा का विरोध नहीं किया है; साथ ही हिन्दी भारत में सर्वग्राह्य और सर्वाधिक बोली और समझी जाने वाली सुगम भाषा है। यह हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक व्यवहृत होने वाली भाषा है। यह तोड़ने नहीं; जोड़ने वाली भाषा है। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने कहा था, ''हिन्दी के बिना भारत की कल्पना नहीं की जा सकती है।''

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गाँधी के कथनानुसार ''हिन्दी राष्ट्रभाषा ही नहीं बल्कि विश्वभाषा बनने जा रही है।''

डा0 शिवमंगल सिंह 'सुमन' के कथन से इस विहंगावलोकन की समाप्ति बेहतर होगी– ''हिन्दी मातृभाषा ही नहीं; अपितु वह देश की आत्मा की आवाज़ है।''

बेटी

डॉ. गरिमा शैलेन्द्र
वरिष्ठ उद्घोषिका

चंद्रकिरण सी बेटी, शीतल पवन सी बेटी।
प्रदूषण के इस दौर में, निर्मल मन सी बेटी ।।
चंद्रकिरण सी बेटी, शीतल पवन सी बेटी।
मंदिर के द्वार पर अंकित, देवी के चरण सी बेटी।
निर्जन वन में स्वजन सी बेटी, रात के सुखद स्वपन सी बेटी।
चंद्रकिरण सी बेटी, शीतल पवन सी बेटी।
संवेदना के वितान सी बेटी, ताराखचित आसमान सी बेटी।
ऊषा की अरुण मुस्कान सी बेटी, सहर की पाकीज़ा अज़ान सी बेटी।
चंद्रकिरण सी बेटी, शीतल पवन सी बेटी।
बेटी का पोषण करो बड़े प्यार से, माता–पिता के अस्तित्व की पहचान है बेटी।
नहीं चल सकता ये संसार बिन उसके, इस विश्व का प्राण है बेटी।
चंद्रकिरण सी बेटी, शीतल पवन सी बेटी।

प्रेरणा

मेरी कोयल
बोल
बसंती राग में।
तू,
अनबोली रही–
कुऋतु में
अब तो,
भर,
अनुराग में।
शीत–शिशिर में–
गये, ठिठुर स्वर,
धारी मौन,
विराग में,
खिले बसंती फूल,
बसंती आग में,
मेरी कोयल
बोल,
बसंती राग में।
ऋतु आई,
उमंग भर लाई
अंतर,
कोकिल काग में।
वंशी का स्वर
वृंदावन में,
बज उठता,
जब फाग में।
रुनझुन करती है–
पायलियां,
सेंदुर भरे
सुहाग में।
मेरी कोयल......
यह संसार विकार कूप है।
छाया कम
कड़ी धूप है
साजन के संग
खिला रूप है।
सब कुछ,
मिल जायेगा,
तुझको,
जो है–
तेरे भाग में।
मेरी कोयल
बोल,
बसंती राग में।

नो ओवर मैसेजिंग प्लीज!

मीना मिश्रा
प्रवरश्रेणी लिपिक

आज कल के आधुनिक समय में मोबाइल फोन से एक दूसरे को मैसेज (SMS) करना एक फैशन बन गयां है। यह शौक बड़ी तेजी से आदत में बदल रहा है। स्कूल व कॉलेज में लेक्चर सुनते समय, सड़क पार करते समय, खाना खाते समय, बात करते समय, हर समय युवाओं की अँगुलियाँ मैसेज टाइप करने में बिजी रहती हैं। इसका नतीजा यह है कि युवा कई हादसों व बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। जैसे कि उत्तेजना, नींद कम आना, परीक्षा परिणामों में गिरावट, जल्द–बाजी आदि। इसके अलावा इस आधुनिक शौक से शारीरिक स्तर में भी गिरावट आ रही है। मैसेज करते समय आँखे, अँगुलियाँ, गरदन बगैरह की माँसपेशियाँ तनाव में रहती हैं। जिससे उनमें अकड़न व दर्द जैसी समस्याएँ हो जाती हैं।

यदि आप सोच रहें हैं कि ज्यादा मैसेजिंग करने से इतने ही नुकसान हैं, तो आप गलत सोच रहें है। नियमित रूप से मैसेजिंग करने से युवाओं में उच्च आदर्शों व नैतिक मूल्यों का हनन हो रहा है। वे अध्यात्म व जीवन के उद्देश्यों के प्रति उदासीन हो रहे हैं। उनका रूझान फिजूल की गप्पे लड़ाने, दोस्त बनाने जैसी बातों पर ज्यादा हो रहा है। यानि जितना अधिक मैसेजिंग उतने उसके दुष्प्रभाव। ऐसे में युवा जीवन के उच्च सिद्धान्तों व मर्यादाओं को महत्व कम दे रहें हैं।

जब युवा अधिक मैसेजिंग में नहीं उलझता है, तो वह शांत व सतोषप्रद अवस्था में रहता है। और उसे अपने जीवन सम्बन्धी विषयों पर मनन व चिंतन का अधिक समय मिलता है।

अधिक व निरन्तर मैसेजिंग करने से युवा सांसारिक उलझनों में उलझता है। ऐसे में वह नैतिक, सामाजिक, भावुक पक्षों और परिस्थितियों पर विचार करने का समय नहीं प्राप्त कर पाता है। इसलिए वह संकीर्ण व संकुचित विचार धारा का शिकार हो जाता है। अधिक मैसेजिंग का शिकार युवा लोगों से प्रत्यक्ष रूप में नहीं जुड़ पाता है।

इसलिए जो युवा अत्यधिक आधुनिक तकनीकों के शिकार हैं वह कम मैसेजिंग करेंगे व शरीरिक, मानसिक व आत्मिक समृद्धि की ओर कदम बढ़ाएँगे।

अनुशासन का महत्व

रामजी शुक्ल
प्रवर श्रेणी लिपिक

आतंकवाद, निर्धनता, भ्रष्टाचार व द्वेषपूर्ण पड़ोसी राष्ट्रों से घिरे भारत को आज आवश्यकता है, वैचारिक एकता तथा कथनी के अन्तर को मिटा देने की। यदि राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक सत्यप्रिय, परिश्रमी व अनुशासित हो तो कठिन समस्याओं का हल भी आसान हो जाता है।

सबसे पहले हमें अनुशासन का अर्थ जानना आवश्यक है। संस्कृत में 'शास' धातु का अर्थ होता है शासन करना या आदेश देना और उसका पालन करना है। 'अनु' का अर्थ है 'पश्चात'। इस प्रकार अनुशासन का अर्थ हुआ– 'शासन के पीछे चलना' या सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक सभी प्रकार के आदेशों और नियमों का पालन करना। अनुशासन 'भय' नही बल्कि एक प्रकार का आचरण है, ज़िसे छात्र अपनी आत्मा से प्रेरित होकर करता है।

किसी भी राष्ट्र का निर्माण इसके नागरिकों के चरित्र से होता है। चरित्रवान और अनुशासित नागरिक ही देश को उन्नति की ओर ले जाते हैं। अतः चाहे वह राष्ट्र का विकास हो, व्यक्ति की उन्नति हो या मानव समाज का विकास हो, जीवन के सभी क्षेत्रों में प्रगति एवं विकास के लिए अनुशासन बहुत महत्वपूर्ण है।

छात्रों के जीवन में अनुशासन का बहुत महत्व है। किसी भी देश की उन्नति एवं विकास उस देश के छात्रों की प्रगति पर निर्भर करता है। सामान्य मानव जीवन एवं विद्यार्थी जीवन के लिए अनुशासन अनिवार्य है। यदि समाज में अनुशासनहीनता आ गई तो सारा समाज दूषित हो जायेगा। राजनैतिक दृष्टि से भी किसी देश का आधार अनुशासन ही होता है। यदि धार्मिक दृष्टि से देखा जाए तो अनुशासन ही धर्म है।

अनुशासन हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यक है। लेकिन यह अनुशासन जबरदस्ती या हठपूर्वक उत्पन्न नहीं किया जा सकता। अनुशासन की भावना अभ्यास पर निर्भर करती है। जिस प्रकार भोजन के बिना व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता, उसी प्रकार अनुशासन के बिना सामाजिक, राजनैतिक, व्यावहारिक या धार्मिक किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त नही कर सकता।

अतः मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुशासन का होना अत्यन्त आवश्यक है। उन्नत जीवन बिताने के लिए अनुशासन का पालन करना आवश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य है।

आकाशवाणी में पुस्तकालय का महत्व

राजेन्द्र प्रसाद
पुस्तकालय एवं
सूचना सहायक

पुस्तकालय का शाब्दिक अर्थ होता है– पुस्तक + आलय। हमारे देश में पुस्तकालय का अस्तित्व अति प्राचीन है। इसी क्रम में नालन्दा विश्व विद्यालय के पुस्तकालय का नाम इतिहास के माध्यम से ज्ञात होता है। इस लाइब्रेरी में अनेक विदेशी भ्रमणकारी (ह्वेनसांग तथा फाह्यान) अपने लेख में नालन्दा के लाइब्रेरी का वर्णन किया है। पद्म श्री डॉ. एस. आर. रंगनाथन को भारतवर्ष में पुस्तकालय विज्ञान का जनक माना जाता है। उन्होनें सर्वप्रथम पुस्तकालय को विज्ञान श्रेणी में स्थापित किया। उन्होने पुस्तकालय को मुख्य रूप से तीन श्रेणी में विभाजित किया :–

– पब्लिक लाइब्रेरी
– शैक्षणिक लाइब्रेरी
– विशिष्ट लाइब्रेरी

पब्लिक लाइब्रेरी मुख्य रूप से पब्लिक द्वारा पब्लिक के ज्ञान वर्धन के लिए बनाया गया है। इसकी शुरूआत ग्राम सभा/कस्बा से शुरू होकर ब्लॉक/नगर से होते हुए जिले स्तर पर समाप्त होती है। इसी क्रम में हमारे देश के सभी जिलों में जिला पुस्तकालय का निर्माण किया गया है। इस प्रकार की लाइब्रेरी में जिले से सम्बन्धित सभी प्रकार की लाइब्रेरी में जिले से सम्बन्धित सभी प्रकार की सूचनायें प्राप्त की जा सकती हैं। इसके पाठक सामान्य लोग होते हैं।

शैक्षणिक पुस्तकालय के अन्तर्गत छोटे शैक्षणिक संस्थानों से शुरू होकर कालेज/महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर पुस्तकालय का विभाजन किया गया है। इस प्रकार के पुस्तकालय में विषय से सम्बन्धित ज्ञान/सूचनाओं का संग्रह मिलता है। INFLib.Net (Information Library Network) एक ऐसी संस्था है जो देश के सभी विश्वविद्यालय पुस्तकालय को Networking के माध्यम से जोड़ने का काम कर रही है। इस पुस्तकालय के पाठक विद्यार्थी एवं शोधकर्ता होते हैं।

विशिष्ट पुस्तकालय का उद्भव विशिष्ट संस्थानों में देखने को मिलता है। इस क्रम में ICAR, ICHR, ICMR, ICSSR नामक संस्थानों में विशिष्ट लाइब्रेरी बनाया गया है। इसके पाठक भी विशिष्ट क्षेत्र के होते हैं। आकाशवाणी का पुस्तकालय भी विशिष्ट पुस्तकालय के अन्तर्गत आता है। आकाशवाणी के पुस्तकालय में मुख्य रूप से मनोरंजन एवं सभी प्रकार के ज्ञान से सम्बन्धित कार्यक्रमों को वर्गीकृत करके सजाया जाता है। आकाशवाणी के पुस्तकालय

को टेप लाइब्रेरी के नाम से भी जाना जाता है। इस प्रकार की लाइब्रेरी में टेप्स, ग्रामोफोन रिकार्ड तथा C.D. रखी जाती हैं। इन्ही में कार्यक्रमों को रिकार्ड करके Prog. Wise वर्गीकृत करके रखा जाता है ताकि User को क्रम से कम समय में सम्बन्धित कार्यक्रम की सी.डी. मिल सके।

आकाशवाणी में टेप लाइब्रेरी का अहम योगदान है। प्रसारण से सम्बन्धित सम्पूर्ण सामग्री टेप लाइब्रेरी द्वारा निर्गत (Issue) की जाती है तथा प्रसारणोंपरान्त वापस लाइब्रेरी में रखी जाती हैं।

वर्तमान समय में टेप लाइब्रेरी में Computer का योगदान दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। आकाशवाणी कानपुर में विगत काफी समय से स्टूडियो द्वारा Local Networking के माध्यम से टेप लाइब्रेरी के Computer को जोड़ दिया गया है तथा टेप लाइब्रेरी क़े Computer में सभी कार्यक्रमों (फिल्म/नानफिल्म) को विशेष Software से लोड करके प्रसारण को अत्यधिक सुगम बना दिया गया है।

• अगर लोग अंग्रेजी पढ़ते हैं तो व्यापारी बुद्धि से और तथाकथित राजनीतिज्ञ फायदे के लिए ही पढ़ते हैं। हमारे विद्यार्थी ऐसा मानने लगे हैं कि अंग्रेजी के बिना उन्हे सरकारी नौकरी हरगिज नहीं मिल सकती। लड़कियों को तो इसलिए अंग्रेजी पढ़ाई जाती है कि उनको अच्छा वर मिल जायेगा। मैं इसकी कई मिसालें जानता हूँ। मैनें ऐसे कितने ही पति देखे हैं जिनकी स्त्री उनके साथ या उनके दोस्तों के साथ अंग्रेजी में न बोल सके तो उन्हें दुख होता है। मैं ऐसे कुटुम्ब को भी जानता हूँ जिनमें अंग्रेजी भाषा को अपनी जुबान बना लिया गया है। इस बुराई ने समाज में इतना घर कर लिया है, मानो शिक्षा का अर्थ अंग्रेजी भाषा के ज्ञान के सिवाय और कुछ है ही नहीं मेरे विचार में तो यह सब हमारी गुलामी और गिरावट की साफ निशानी है।

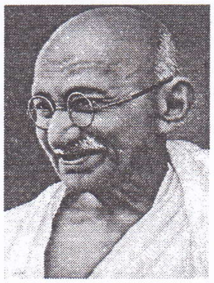

- राष्टपिता महात्मा गाँधी

हिन्दी का भविष्य

राजेश कुमार
अभि० सहा०

हिन्दी हमारे देश की बहुसंख्यक जनता द्वारा बोली जाने वाली भाषा है, हिन्दी भारत की राष्ट्र भाषा है। हमारे प्राचीन ग्रन्थ वेद, पुराण, रामायण, महाभारत इत्यादि हिन्दी और संस्कृत भाषा में ही लिखे हुये हैं इस प्रकार हिन्दी हमारे देश की संस्कृति, सभ्यता व साहित्य से भी नाता रखती है।

वर्तमान समय में दूरदर्शन एवं रेडियो द्वारा हिन्दी में बहुत से अच्छे–अच्छे कार्यक्रम संचालित किये जाते है, जिनसे प्रभावित होकर विदेशी छात्र भी हिन्दी सीखने हमारे देश में आते हैं और हमें हिन्दी का भविष्य उज्जवल दिखाई देता है। आज आवश्यकता है कि भारत के प्रत्येक प्रान्त में सभी सरकारी कार्यालयों में हिन्दी के कार्य किये जाने को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए एवं आदेश भी हिन्दी में लिखे जाने चाहिए।

चिकित्सा, विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकें हिन्दी में लिखी जाए तथा हमारे देश के ऋषि, मुनियों द्वारा खोजे गये नुस्खे प्रचलित, प्रसारित किये जायें। नये शोधो में हिन्दी अध्ययन से पढ़ाई को प्रोत्साहित किया जाये। जिससे कि हिन्दी भाषा–भाषी भारतीय अच्छा ज्ञान प्राप्त कर अपनाकर भविष्य उज्ज्वल बना सकें। हमारी योग्यता को उजागर करने में भाषा एक सशक्त माध्यम होती है। कभी–कभी बहुत योग्य व्यक्ति भाषा के हनन के अभाव के कारण अपनी योग्यता को व्यक्त नहीं कर पाता।

अतः यदि हिन्दी भाषा को सरल शब्दावली में प्रस्तुत किया जायेगा तो हमारे देश के बहुत से प्रतिभाशाली युवा आगे आकर अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित कर सकेंगे जो कि हमारे देश को विश्व स्तर पर आगे बढ़ाने में काफी सहायक होगा।

हिन्दी भाषा आज विश्व में अपना स्थान बना चुकी है। अब हमें प्रयास करना है कि हिन्दी का उत्थान हो और यह विश्व की प्रथम व्यक्ति की भाषा बनें। हमें विश्वास है कि भारत की जनता इस ओर अवश्य अपना ध्यान आकर्षित करेगी और हिन्दी भाषा का भविष्य उज्जवल बनायेगी।

अभी हम 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाते हैं। अब हम संकल्प लें कि हम हिन्दी दिवस के दिन हिन्दी दशक मनाने की ओर सार्थक कदम उठायेंगें। हिन्दी के प्रति अपनी भावनाओं को इन पंक्तियों में क्या कहते हैं –

हिन्दी का सम्मान बढ़े
घर–घर इसकी शान बढ़े
इससे हिन्दुस्तान बढ़े
भारत का गुणगान बढ़े
विश्व पटल पर हिन्दी लाओ
भारत की पहचान बढ़ाओ
हिन्दी को दिल से अपनाओ
हिन्दी को सबको सिखाओ।

मनाली

विनीता शुक्ला
आशुलिपिक

देवस्थली हिमांचल प्रदेश की सुरम्य वादियों में बसा कुल्लू जिले का एक छोटा सा अंचल है मनाली। यहाँ के स्थानीय निवासियों के अनुसार हिन्दू पौराणिक ग्रन्थों में उल्लिखित मनु देवता के नाम पर बसा है मनाली। चारों ओर अद्भुत प्राकृतिक सुन्दरता से ओत–प्रोत इसे सप्त ऋषियों का निवास स्थान भी कहा जाता है। चन्डीगढ़ से बस से रात्रि यात्रा के बाद अल सुबह मनाली पहुँचते ही मई के मौसम में भी सर्द हवाओं के झोंको ने हमारा स्वागत किया मानों ये हवायें पलक पावड़े बिछाये हुए हमारा इन्तजार कर रही थीं।

मनाली से मात्र एक किलोमीटर की दूरी पर एक छोटी सी पहाड़ी पर बसा हुआ है अति प्राचीन हिडिम्बा मन्दिर। पंच पांडवों में से एक भीम की पत्नी हिडिम्बा के नाम पर है ये मन्दिर।

मन्दिर के परिसर में पहाड़ी सौन्दर्य (महिलायें) अपनी पूरी ताजगी के साथ वहाँ आने वालों का स्वागत करती हुई, छोटे–छोटे शो पीस आदि को बेचते हुए लेने की मनुहार कर सरस मुस्कान बिखेर रही थीं। उसके बाद काठ महादेव का मंदिर जो पूरा नक्काशीदार लकड़ी से बना था तत्पश्चात् वोट क्लब जहाँ स्नैक्स वगैरह लेते हुए बहती हुई नदी के सौन्दर्य का रसपान करने के साथ ही स्केटिंग राफ्टिंग आदि का मजा ले सकते हैं। फिर रात में माल रोड पर घूमती हुई नव विवाहित जोड़ों की भारी भीड़ को घूमते देख कर खयाल आया कि इसे हनीमून के लिए आदर्श स्थान मानकर इसे हनीमून राजधानी का दर्जा दिया जा सकता है। मनाली से 3 किलोमीटर की दूरी पर है वशिष्ठ मंदिर जहाँ जाने के लिए ब्यास नदी को पार करना पड़ता है यह एक ऐसी नदी है जो हमेशा आपके साथ–साथ चलती है, अपने होने का अहसास कराती हुई। यहाँ से निकलते हैं गर्म पानी के सोते जिन्हे वशिष्ठ मंदिर के परिसर में बने स्नानघरों में लगे नलों को पाइप लाइन द्वारा जोड़ दिया गया है। आप यहाँ स्नान कर या सिर्फ हाथ पैर ही धोकर मंदिर के दर्शन कर सकते हैं। मंदिर में वशिष्ठ की मूर्ति के साथ भगवान् राम सपरिवार विराजमान है तथा दीवारों पर रामायण के चौपाइयां तथा आदर्श वचन लिखे हुए हैं। विदेशी पर्यटकों को यहाँ अपने आदम रूप में नहाते देखकर आप शायद आँख ही बंद कर सकते हैं। सोलांग घाटी में

प्राकृतिक सौन्दर्य के कुछ अद्भुत नजारे देखने को मिले। पैराग्लाइडिंग करते हुए पर्यटकों को देखकर रोमांच और भय एक साथ प्रकट हुए। मनाली के दक्षिण में है नागौर का किला जोकि अब एक आलीशान होटल में तब्दील हो चुका है। यह चट्टानों, पत्थरों और लकड़ी से बना हुआ है जहाँ हाथ की बनी चीजें और सुन्दर पेंटिंग्स है। कुदरत की एक अद्भुत संरचना है वन विहार। पेड़ों से आच्छादित लम्बा गलियारा जो जब खत्म होता है तो आप अपने आपको ऐसी जगह पाते हैं जहाँ सामने पहाड़ों का सौन्दर्य बिखरा पड़ा है तो नीचे बलखाती नदी। एक ऐसी जगह जहाँ आप अपने होने का अहसास खो बैठते हैं। एक ऐसी आध्यात्मिक अनुभूति जो आपको समाधिस्थ कर दे।

तो ऐसा है मनाली जहाँ आपको घूमते हुए हमेशा ताजगी का अहसास होता है लेकिन इसके लिए पैरों में ताकत भी जरूरी है इसलिए तो कहते हैं –

सैर कर दुनिया की गाफ़िल ज़िन्दगानी फिर कहाँ।
ज़िन्दगी है गर तो नौज़वानी फिर कहाँ।

• राष्ट्रीय मेल और राजनीतिक एकता के लिए सारे देश में हिन्दी और नागरी का प्रचार आवश्यक है।

-लाला लाजपत राय

मैं एक क्लर्क हूँ

देश राज गौतम
अवर श्रेणी लिपिक

आंखों में चश्मा
हाथ में पेन,
होठों में पपड़ी
माथे में बल,
चाय की चाहत,
पान भी न दे राहत,
क्योंकि मैं एक क्लर्क हूँ

नोट गिनता हूँ,
सपने नये बुनता हूँ,
खुली आँखों के ये सपने,
कभी नहीं होते अपने,
घर के नये–नये खर्चे
टीवी, फ्रिज के ये चर्चे,
बीबी को ललचाते,
मेरी जेब देख शर्माते,
क्योंकि मैं एक क्लर्क हूँ

हर ऑफिस में मिलता हूँ,
तंगी में भी खिलता हूँ,
जन धन का रखूँ हिसाब,
मुख में बसता जी साब,
क्योंकि मैं एक क्लर्क हूँ

काम पड़े तो मैं बड़ा बाबू,
वरना मेरे देह से आती बदबू,
बिल फँसता हो तो चाय पीजिए,
नही तो अपना रास्ता लीजिए,
रोज यही मैं देखा करता,
फिर भी सारा मैं लेखा करता,
क्योंकि मैं एक क्लर्क हूँ।

वेदना और मेरा नाता,
तोड़े से भी टूट न पाता,
दुनियाँ उससे दूर भागती,
पर दुख में वही संभालती
मुझको भी दुत्कारा जाता,
पर सबके काम मैं ही आता,
क्योंकि मैं एक क्लर्क हूँ

आफिस में काम का बोझ,
बढ़ता जाता रोज रोज,
घर में बीबी बच्चों का दुख,
पहली को ही तनखा जाती सूख,
अपना न कोई सुनने वाला,
क्योंकि मैं एक क्लर्क हूँ।

रेडियो-प्रसारण

प्रवीन कुमार शर्मा
वरिष्ठ तकनीशियन

रेडियो प्रसारण भारत जैसे बहुरंगी संस्कृति वाले देश में जहाँ अनेक धर्म, भाषायें, पर्व, त्यौहार रीति रिवाज तथा खान–पान है; रेडियो प्रसारण ने अपने दायरे में सबको समेटा है। इसके कारण स्थानीय संस्कृति, लोक–साहित्य, संगीत आदि को संरक्षण मिला है। वास्तव में रेडियो प्रसारण में यह धरोहर श्रव्य रूप में संरक्षित है। सार्वजनिक हितों की सूचनायें नियमित प्रसारण का हिस्सा है।

भारत में प्रसारण के विकास हेतु विशेष अवसर है। यहाँ दूरियों और विस्तृत भू–भाग के कारण अनेक संभावनायें हैं। भारत के सुन्दर गाँवों में कई लोगों को अपने–अपने काम के कारण दूर–दराज के गाँवों में जाना पड़ता है। जो मित्रों के साथ मानवीय साहचर्य के इच्छुक होते हैं। कई ऐसे लोग हैं जो सामाजिक परम्पराओं के कारण घर से बाहर नहीं जा सकते। उनके तथा असंख्य अन्य लोगों के लिए रेडियो प्रसारण एक वरदान की तरह है। इसकी संभावनायें अनन्त हैं। भारत में प्रसारण के विस्तार की संभावनायें शेष हैं। आकाशवाणी का प्रथम प्रसारण 25 जुलाई 1927 को बम्बई के केन्द्र से हुआ था।

विविध भारती सेवा का कानपुर से प्रसारण 15 सितम्बर 1963 को हुआ, तब से आज तक आकाशवाणी कानपुर विविध भारती सेवा अपने श्रोताओं की सेवा में निरन्तर अग्रसर है। उन्हें मनोरंजक तथा ज्ञानवर्धक कार्यक्रम सुनवाने के अतिरिक्त नये उभरते क्षेत्रों को तकनीकी ट्रेनिंग भी प्रदान कर रहा है।

• हम सब लोग अपनी–अपनी मातृभाषा की रक्षा करते हुए हिन्दी को साधारण भाषा के रूप में पढ़ें।

- महर्षि अरविन्द

बेटी बचाओ

कुँवर सिंह
एम0टी0एस0
आकाशवाणी, कानपुर

बोये जाते हैं बेटे, उग जाती हैं बेटियाँ
खाद पानी बेटों को, लहलहाती है बेटियाँ
एवरेस्ट तक ठेले जाते हैं बेटे
चोटी पर चढ़ जाती हैं बेटियाँ
पढ़ने भेजे जाते हैं बेटे
पढ़ कर निकलती हैं बेटियाँ, रूलाते हैं बेटे, रोती हैं बेटियाँ
गिराते हैं बेटे, संभालती हैं बेटियाँ, स्वप्न दिखाते हैं बेटे
पूरा करती है बेटियाँ,
जीवन बेटों को मिलता और
मारी जाती हैं बेटियाँ।

• शायद हममें कुछ ऐसे आदमी हैं जिन्हें इस बात का डर है कि हिन्दी वाले हमारी मातृ भाषा को छुड़ाकर उसके स्थान में हिन्दी रखवाना चाहते हैं। यह निराधार भ्रम है। हिन्दी प्रचार का उद्देश्य केवल यही है कि आजकल जो काम अंग्रेजी उद्देश्य से लिया जाता है वह आगे चलकर हिन्दी से लिया जाए। अपनी माता से भी ज्यादा प्यारी मातृभाषा बंगला को हम कदापि नहीं छोड़ सकते किन्तु भारत के विभिन्न प्रान्तों के भाइयों से बातचीत करने के लिए हिन्दी या हिन्दुस्तानी को सीखनी ही चाहिए। स्वाधीन भारत के नवयुवकों को हिन्दी के अतिरिक्त जर्मन, फ्रेन्च आदि यूरोपीय भाषाओं में ऐसी एक दो सीखनी पड़ेगी। नहीं तो अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में हम दूसरी जातियों का मुकाबला नहीं कर सकेंगें। कुछ लोगों का विचार है कि बंगला राष्ट्रभाषा हो क्योंकि इसमें उच्चकोटि का साहित्य है। हिन्दी में उच्च साहित्य है या नहीं– यह विवादग्रस्त विषय उठाना ठीक नहीं है। हिन्दी व्यापक रूप से भारत में बोली जाती है और इसमें संग्रहण शक्ति है तथा यह सरल है।

- नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

स्मृति

आनन्द कुमार मिश्रा
नैमित्तिक उद्‌घोषक

अँधेरी दरारों से
झाँकते चेहरों में,
एक चेहरा तुम्हारा था
जिस पर
समय ने लिखा था मौन
उजालों की उलझने
तुम्हारे वजूद में थी
झील की गहराइयाँ
और समुद्र की ख़ामोशी
नापी थी मैने
तुम्हारी आँखो में
एक प्रश्न के लिए
मैं तुमसे मिलता हूँ
बातें करना चाहता हूँ
अपने दिल की, लेकिन
तुम्हारी ख़ामोश निगाहों से
मुझे डर लगने लगता हे
क्योंकि ख़ामोशी
मुझे तुमसे दूर ले जाती है
अक़्सर ये सिलसिले चलते रहेंगे,
और हम लड़ते रहेंगे अपने आप से
अच्छा होता कि ये दूरियाँ कम हो जाती
ताकि हम तुमसे मिल सकते
और अपनी राहें, आगे बढ़ जाती
एक नये सफ़र की ओर।

लापता

मित्रों !

एक दुबली–पतली, गोरी–चिट्टी लड़की, जिसकी उम्र कुछ हजार साल की है और जो! सच्चाई की बेदाग उजली साड़ी और विकासोन्मुख मूल्यों की विचित्र कंचुकी पहने हुए नव–युग के मेले में–विश्व के बाज़ार से गायब हो गई।

कहते हैं सभ्यता की सड़क पर, अनैतिकता की मोटर पर सवार कुछ घोर भौतिकवादी उसे उठा ले गये। बुद्धिवादिनी पुलिस देखती रह गई।

आप सभी से प्रार्थना है, कि जो उसे पाये नीचे लिखे पते पर पहुँचा दे। उचित पुरस्कार दिया जायेगा।

लड़की का नाम है – ''मानवता''
पता है – संसार

मातृभाषा हिन्दी

सारिका शुक्ला
नैमित्तिक उद्‌घोषिका

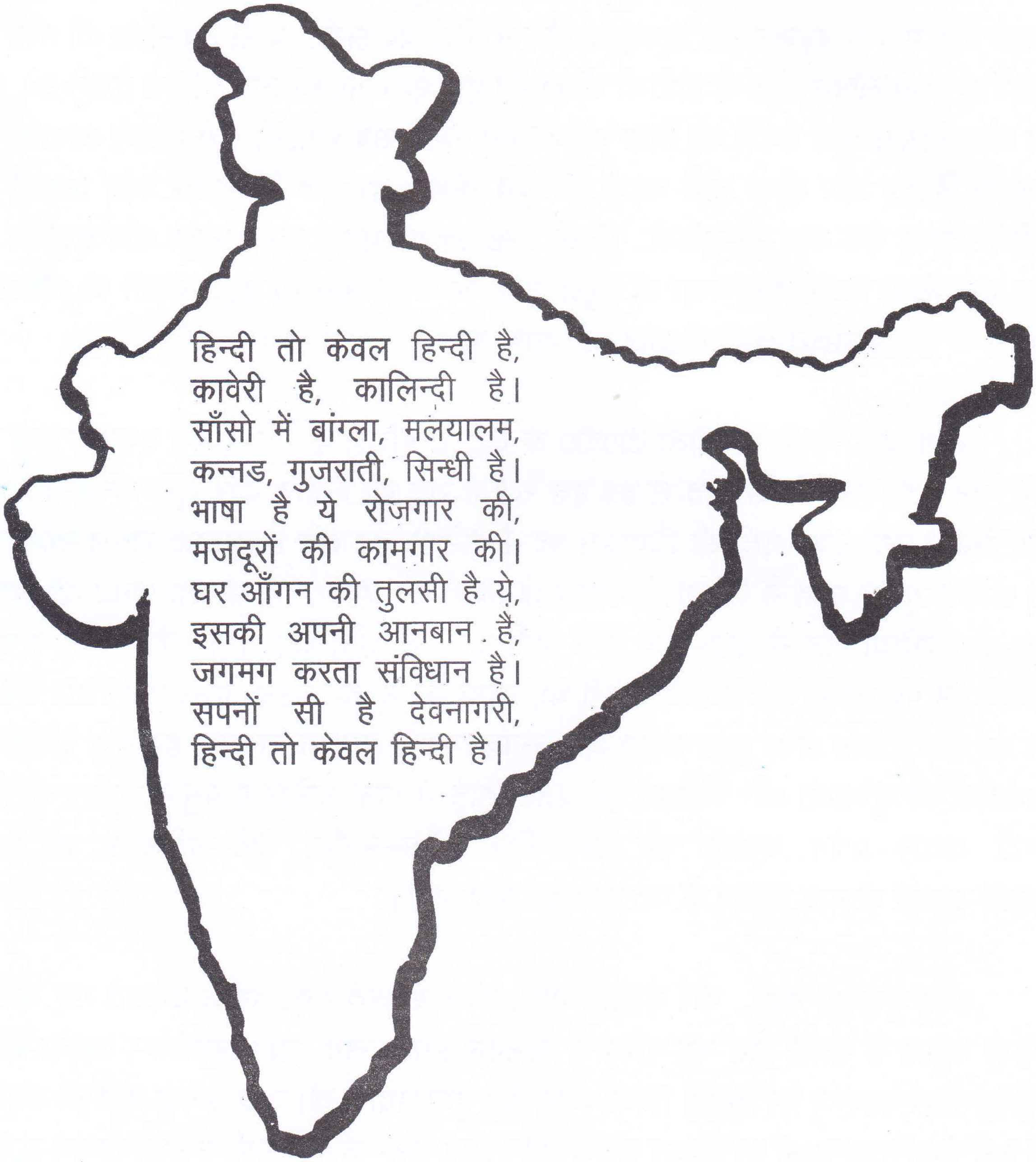

हिन्दी तो केवल हिन्दी है,
कावेरी है, कालिन्दी है।
साँसो में बांग्ला, मलयालम,
कन्नड, गुजराती, सिन्धी है।
भाषा है ये रोजगार की,
मजदूरों की कामगार की।
घर आँगन की तुलसी है ये,
इसकी अपनी आनबान है,
जगमग करता संविधान है।
सपनों सी है देवनागरी,
हिन्दी तो केवल हिन्दी है।

नफ़रत के हर बुत को तोड़ा जा सकता है,
तूफानों के रूख को मोड़ा जा सकता है।
प्रान्त–प्रान्त में हिन्दी पढ़कर, हिन्दी लिखकर,
एक सूत्र में राष्ट्र को जोड़ा जा सकता है।

- असग़र साहिल

रेडियो के झरोखे से...

ओम प्रकाश शर्मा
नैमित्तिक उद्‌घोषक

ये आकाशवाणी है, देश की सुरीली धड़कन... कुछ ऐसा ही जाना माना उद्‌घोष... फिर उसके बाद एक से बढ़कर एक खूबसूरत फ़िल्मी गीतों की झड़ी... कभी हवामहल की हंसी की फुहारें तो कभी लोकसंगीत के मोतियों की लड़ी। एक ऐसा अदृश्य साथी, जिसे देखने को, छूने को और जिससे कुछ कहने को दिल चाहे। कान, जाने सब समझने लगे थे इन आवाज़ों को फर्श से बिस्तर और थोड़ा हाथ बढ़ाते ही कुछ ऊँचाई पर एक ब्रेकेट पर रखा लकड़ी की कैबिनेट वाला एक बड़ा सा रेडियो... किसी तरह उचक–पुचक कर वाल्यूम और ट्यूनिंग की नॉब घुमा दिया करता था। मज़ा तो बहुत आता था मगर डाँट भी बहुत पड़ती थी। फिर भी रेडियो के संग छेड़छाड़ करने से बाज़ नहीं आता था।

आज आप किसी एलसीडी टी0वी0 के लेटेस्ट मॉडल को भी, इतनी तवज्जो नहीं देते होंगे, उन दिनों जितनी शिद्‌दत से हम इस रेडियो सेट को निहारा और सुना करते थे। आज आप जेब में रखी एक छोटी सी डिवाइस पर भी रेडियो सुन लेते हैं, झटपट चैनल बदल लेते हैं। लेकिन गुज़रे वक्त में रेडियो से ज़्यादा छेड़छाड़ को अच्छा नहीं समझा जाता था क्योंकि एक–एक रेडियो सेट से कई–कई लोग आनन्द ले रहे होते थे। संचार के माध्यम कम थे, लेकिन इन पर जो भी जानकारियाँ होती थीं, लोगों पर उनका गहरा असर होता था। रेडियो, घर का एक सदस्य जैसा हुआ करता था... सबका प्यारा, सबका दुलारा। हर रोज़ रेडियो पर कार्यक्रमों की शुरुआत और समापन ऐसे प्रतीत होते थे मानो मन्दिर में प्रभु का पूजन शुरू हो, घण्टों वन्दन–अर्चन चलती रहे और फिर झाँझ–मंजीरे, घंटे–घड़ियाल के साथ, आरती–प्रसाद के बाद मन्दिर के पट बन्द कर दिए जाएँ।

वक्त गुज़रता गया... दौर बदलते गए... शौक़ बदलते गए... ज़ौक बदलते गए, लेकिन रेडियो नामक ये साथी नित नए परिधान पहनकर हमेशा संग रहा। लड़कपन ज्यादा था तो तक़रीबन हर आवाज़ पर फुदक लिया करते थे। दुनियादारी की कुछ समझ बढ़ी तो ट्यूनिंग की सुई रोमाण्टिक गानों पर आकर अटक गई। जाने कब–कैसे ये गाने मन को लुभाने लगे।

एक रोज़ रेडियो पर सरस्वती चन्द्र फिल्म का गाना चल रहा था–'फूल तुम्हें भेजा है खत में...।' मैं अपने काम में मशगूल फुल वाल्यूम पर चिघ्घाड़े जा रहा था– 'खत से जी भरता ही नहीं अब नैन मिले तो चैन मिले...।' माताजी पीछे से कब आ गई जान ही नहीं पाया। मेरी घुँघराली जुल्फों को उन्होने पीछे से ही दबोचा और घसीटती ले गई शाही दरबार में। जब तक आँय–आँय करता, बाबू जी के सामने पेश था।

'क्या है ये सब ?' बाबूजी ने पूछा।

'ये पूछिए अपने साहबज़ादे से,'माताजी गुर्राईं। अब इनका मन खत से नहीं भर रहा, किसी से नैन मिले, तभी चैन मिलेगा...' सुबह से रात तक बस रेडियो–रेडियो–रेडियो.... और हर लाइन के बाद एक तमाचा। अच्छा था कि उन्हें पूरा गाना नहीं याद था वरना दोनों गाल सुजा देतीं। बाबू जी हैरान थे और समझ मुझे भी कुछ नहीं आ रहा था, सिर्फ़ खोपड़ी झुकाए बाल खुजा रहा था।

उन दिनों सिबाका गीतमाला का बड़ा क्रेज़ था। अमीन सायानी साहब की आवाज़ का क्या कहना... वाह–वाह... जैसे हौले–हौले कोई कानों में शहद टपकाता जाए, लेकिन रेडियो सीलोन ट्यूब–इन करने के लिए बड़े जतन करने पड़ते थे। ये नहीं तो ऑल–इण्डिया–रेडियो की उर्दू सर्विस, या फिर कोई और स्टेशन। दिन–रात कान उमेठने का नतीजा ये रहा कि रेडिया की हालत खस्ता हो गई। एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा... तीन रेडियो सेट लाए गए मगर मेरी इंज़ीनियरिंग के चलते तीनों ने दम तोड़ दिया।

''मुझे समझ नहीं आता ये लड़का जीवन में क्या करेगा। अरे नाटक–नौटंकी ही करनी तो छोड़ो पढ़ाई–लिखाई। कम–अज़–कम मेरा पैसा तो न बर्बाद हो।'', बाबूजी बड़बड़ाए जा रहे थे।

मुझे ऐंसा लग रहा था मानो कोई अच्छे–भले ट्यूण्ड सितार के सातों सुर बुरी तरह छेड़ रहा हो। लेकिन बाबूजी ग़लत नहीं कहते थे। इंटीग्रल कैलकुलस के सवाल हों या केमिस्ट्री की रिएक्शंस, शेक्सपियर का ड्रामा हो या संत कबीर की शैली, बैकग्राउण्ड में मेरा रेडियो टुनटुनाते रहना जरूरी था। ग़लती तो मेरी ही थी।

समझता तो मैं भी था कि पढ़ाई करते वक़्त रेडियो चला के बैठ जाना, कोई अच्छी बात नहीं, फिर भी मोहब्बत तो मोहब्बत है साहब, इस पर किसी का क्या वश है और इसमें सब कुछ जायज़ भी। ख़ैर, वक्त गुजरता गया और विविध भारती से मेरे प्यार के चर्चे आम होते गए। कुछ बरस तक लोग मुझे क्या खोया क्या पाया के मन्थन में फँसा देते थे, ये और बात है कि अब मैं लोगों को सीधी राह बता देता हूँ।

किसी से क्या कहता। बात कहने का लहजा, सलीका, शब्दों का चयन, उच्चारण और

वाणी की सहजता–सरलता–मधुरता सब एक साथ सीखने की ख़ातिर किस स्कूल में दाखिला लेता। उम्र के हर पड़ाव पर, क्या और कोई मेरे ही जैसी, मेरे मन की बातें करता। रेडियो पर मचलते गीतों की मानिन्द, क्या क़दम–क़दम पर कोई मेरे जज़्बातों का साथी होता। कितने ही लोग मिले, कितने ही चले गए... पर रेडियो जैसा साथ निभाने वाला तो शायद ही मिला हो।

बात थोड़ी संजीदा हो चली, चलो रेडियो खोलें, कोई गाना सुन लें। अहा! क्या गाना है ... 'कोई लौटे दे मेरे बीते हुए दिन, प्यारे प्यारे दिन वो मेरे, प्यारे पल–छिन...।'

गाना चल ही रहा था कि पानी की मोटी सी धार, छपाक से आकर मुँह पर पड़ी। मैं झट से उठ बैठा और आँखे मलने लगा। सामने श्रीमती जी खड़े मुस्करा रही थीं और मैं मन ही मन झुल्ला रहा था।

''सुबह से तीन बार जगा चुकी हूँ. इनकी नींद ही नहीं पूरी होती। मुन्ना कब से स्कूल के लिए तैयार हो गया, जाइए जल्दी उसे चौराहे तक छोड़कर आइए, वरना बस छूट जाएगी।।''

''अच्छा सुनिए, लौटते समय ढाई सौ ग्राम गरम जलेबियाँ लेते आइएगा।'' लफ्ज़ों के मोती चमकाते हुए, चलते–चलते ये बोलीं।

मैने मुड़कर पीछे की ओर देखा। ऊँचे बरगद के घने पत्तों की ओट से ऊषा सुन्दरी मुस्करा रही थी। रेडियो पर 'भूले–बिसरे गीत' का तीसरा गाना खत्म हो चुका था। विज्ञापन चल रहा था। 'आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों से बना... वज्रदन्ती... सारी दुनिया के दाँत मज़बूत करे।

• जनता में एक भाषा के माध्यम से ही एकता आ सकती है। दो भाषायें जनता को निश्चय ही विभाजित कर देंगी यह एक अटल नियम है। भाषा के माध्यम से संस्कृति सुरक्षित रहती है। चूंकि भारतीय एक होकर सामान्य सांस्कृतिक विकास करने के आकांक्षी हैं, अतः सभी भारतीयों का यह अनिवार्य कर्त्तव्य है वह हिन्दी को अपनी भाषा के रूप में अपनायें।

- डॉ. भीमराव अम्बेडकर

पानी

सत्यम कुमार सविता

जो पानी की बरबादी करते हैं, उनसे मैं यही पूँछना चाहता हूँ कि क्या उन्होने बिना पानी के जीने की कोई कला सीख ली है, तो हमें भी बताएँ, ताकि भावी पीढ़ी बिना पानी के जीना सीख सके। नहीं तो तालाब के स्थान पर मॉल बनाना क्या उचित है ? आज हो यही रहा है। पानी को बरबाद करने वालो यह समझ लो कि यही पानी तुम्हे बरबाद करके रहेगा। एक बूँद पानी यानी एक बूँद खून, यही समझ लो। पानी आपने बरबाद किया, खून आपके परिवार वालों का बहेगा। क्या अपनी आँखों को इतन सक्षम बना लोगे कि अपने ही परिवार के किसी प्रिय सदस्य का खून बेकार बहता देख पाओगे ? अगर नहीं, तो आज से ही नहीं, बल्कि अभी से पानी की एक–एक बूँद को सहेजना शुरु कर दो। अगर ऐसा नहीं करोगे तो मारे जाओगे।

जल ही तो जीवन है
पानी है गुणों की खान
पानी ही तो सब कुछ है
पानी है धरती की शान

पर्यावरण को न बचाया गया
तो वो दिन जल्दी ही आएगा
जब धरती पे हर इंसान
बस 'पानी पानी' चिल्लाएगा।

• मैं हिन्दी का प्रेमी हूँ। सांस्कृतिक जीवन में हिन्दी के महत्व को भली भाँति समझता हूँ। भारतीय एकता का मुख्य साधन हिन्दी ही बन चुकी है। इसीलिए भारतीय राष्ट्र के विरोधी हिन्दी के विरोध में अपनी शक्ति का प्रयोग कर रहे हैं।

डॉ. सुनीत कुमार चटर्जी

'हमारा देश'

सीमा श्रीवास्तव 'असीम'
नैमित्तिक उद्घोषिका

अनेकता में एकता, वैविध्य में इकरूपता,
अन्तरिक्ष के मस्तक को, चूमती है सभ्यता,
है अपरिमित कोष, सदियों से यहाँ पर ज्ञान का,
भूमि से नभ तक यहाँ, विस्तार है विज्ञान का।

गाँधी–सुभाष देश के, सम्मान का हैं आईना,
इसी देश की धरती पर, जन्मी कितनी वीरांगना,
कितने ही तूफानों को, रौंदा है वीर जवानों ने,
हँस–हँस अपनी जाँ दी है, आज़ादी के परवानों ने।

खलिहानों में ख़ुशहाली है, मैदानों में हरियाली,
शूल बिछे राहों पर चल, मनचाही मंज़िल पाली,
हर अँधियारी रात यहाँ, अब स्वर्ण भोर में बदल गयी
नयी नज़र है, नयी सोच है, भारत की तस्वीर नयी।

अनवरत अग्रसर प्रगति पन्थ पर, मानव प्रत्येक दिशा में,
विजय वरण कर चुका आज, हिमगिरि की शिखर शिला पे,
दौड़ रहा निर्भय मानव, जलनिधि के वक्षस्थल पर,
मोड़ चुका है नदियों की धारा को, आज मरूस्थल पर।

विश्व बन्धुत्व भाव आज, आपूरित है जनमानस में,
मानवता का नाता है, जन–जन का जन–जन से,
संयुक्त हैं सहयोग से, समदृष्टि से, समभाव से,
स्नेह से, अनुराग से, विश्वास के अनुभाव से।

कल्पना मस्तिष्क की अब, हो गयी साकार,
हर स्वप्न ने लिया है, अब सत्य का आकार,
सागर के पांव चूमकर, लौटती पनडुब्बियाँ,
कह रही है बस यही, ये है हमारी 'इण्डिया'।

एकता की बात

मालिनी सक्सेना
नैमित्तिक उद्‌घोषिका

गुलों के रंग, खुश्बू और हवा की क्या बात करें,
ज़िन्दगी छोड़े कभी तो गुलिस्तां की बात करें।

बस गया है ह्रदय में भूखे ग़रीब का दर्द यारों,
अब हम कौन से मौसम और बहारों की बात करें।

भटक रही हूँ मैं एक मुद्दत से घर की तलाश में,
अभी तक घर न मिला, क्या आशियाँ की हम बात करें।

हर शख्स यहाँ ज़ख़्मों को बन्द दिलों में लिये फिरता है,
अब किसे हम जख्म दिखायें और किससे दवा की बात करें।

जिसे कभी न चाहा, न देखा और न मिले कभी,
हम क्या उसकी शक्ल बनाये, और क्या उस, खुदा की बात करें।

छोड़ दें आपस के झगड़े, छोड़ दें मन के मलाल,
छोड़ कर दुश्मनी का क़िस्सा, चलो आसमाँ की बात करें।

परिवर्तन

प्रकृति में होता प्रतिपल परिवर्तन,
हर–पल होता, नित–नवीन, सृजन।
जारी रहती यह यात्रा निरन्तर,
चलता रहता यूँ ही जीवन।

हर पल हम आगे बढ़ते हैं,
फिर भी क्यों है, ठहरे से क़दम।
वक़्त कभी नहीं रुकता है,
पर कहाँ खो गया परिवर्तन।

हाँ, है तलाश उस परिवर्तन की,
हो वक़्त, शिकंजे में जिसके।
जीवन हो निरन्तर गतिमय ऐसा,
गति खोजे खुद को जीवन में।

अब हो कुछ ऐसा परिवर्तन
परिवर्तन खो जाए स्वयं सृजन में।
काश! सभी जन मानव बनकर,
खुद को देखें हर मानव में।

पुरुष का विश्वास

सौरभ त्रिपाठी
नैमित्तिक उद्‌घोषक

प्रेम के आकर्षण में खिंची हुयी नारी ने पुरुष से कहा, ''मैं तुम्हारा विश्वास चाहती हूँ''
''मेरे अधीन रहना होगा,'' पुरुष ने गर्व से कहा।
''मैं सदैव तुम्हारी ही रहूँगी,'' नारी ने उत्तर दिया।
''पर मुझे भरोसा कैसे हो''? पुरुष ने पूछा।
चाँदी, सोने की कमी नहीं थी, नारी ने अपने पैरों में कई नामों की कई वज़नदार बेडियाँ डाल ली।
''और हाथ! क्या ये बिना बँधे रहेंगे ?''

प्रेमविवश नारी ने चूड़ियाँ, कड़े आदि नामों की हथकड़ियाँ हाथों में डाल लीं। लेकिन पुरुष को इतने पर भी विश्वास नही हुआ। उसने ऊँट को नाक छेद कर वश में करते देखा था। स्त्री की सुन्दर नाक पर हाथ लगाकर बोला, ''नाक भी छिदवानी होगी''। स्त्री ने अपनी कोमल नाक भी छेद ली, उसकी आँखो में पानी भर आया। परन्तु पुरुष का हृदय फिर भी कठोर बना रहा। उसके कहने पर स्त्री ने कान भी छेद लिया और बालियाँ भी पहन लीं और पराधीनता के इन बन्धनों में बँधी नारी सिसक–सिसक कर रोने लगी।

पुरुष ने मन में सोचा यदि यह फिर भी भागी तो क्या पकडूँगा, इसलिए बोला, ''तुम अपने बाल मत कटवाओ।'' स्त्री ने स्वीकार किया, ''और देखो'' पुरुष ने कहा, ''साड़ी दोनों पैरों के चारो ओर इस कदर लपेटो कि भागते न बने''। बेबस नारी ने यह भी स्वीकार किया, यहाँ तक कि अपनी गर्दन और कमर पर भी बोझ बाँध लिया फिर विनीत स्वर में बोली, ''अब तो विश्वास करोगे?'' पुरुष ने अकड़कर कहा, ''मेरे मरने के बाद मेरे साथ ही जलकर मरना होगा।''

''हाँ मैं तुम्हारे साथ ही जलकर मर जाऊँगी, मगर यदि मै पहले मर गयी, तो तुम.....''
पुरुष डाँट कर बोला, ''चुप रहो, मैं पूर्ण स्वतंन्त्र हूँ''।

नारी चुप हो गयी। इतना होने पर भी पुरुष ने उसे घर और घूँघट में बन्द कर दिया और मूँछों पर ताव देता शान से दूसरों के घरों में ताकझाक करता हुआ बाहर घूमने लगा। लेकिन शंकाशील मन घर पर ही लगा रहा। सोचता था, कहीं नारी फिर भी विश्वासघात न कर बैठे।

वाह रे, पुरुष।

आकाशवाणी कानपुर का परिवार

क्र.सं.	अधिकारियों/कर्मचारियों के नाम	पद	मोबाइल नम्बर
1.	डॉ. करूणाशंकर दुबे	सहायक निदेशक (कार्यक्रम)	09415132255
2.	श्री अवधेश्वर सहाय	सहायक निदेश (अभि0)	08004929942
3.	श्रीमती शकुन्तला गौतम	कार्यक्रम अधिशासी	07376519750
4.	श्री शोभित मित्रा	कार्यक्रम अधिशासी	09415478007
5.	श्री आशीष तिवारी	कार्यक्रम अधिशासी	09336210966
6.	सुश्री रीता डे	वरिष्ठ उद्घोषिका	09935251918
7.	श्रीमती गरिमा शैलेन्द्र	वरिष्ठ उद्घोषिका	09415407091
8.	श्री राजेन्द्र प्रसाद	पुस्तकालय एवं सूचना सहायक	08005183672
9.	श्री गौरी शंकर कर्नाटक	वरि0 अभि0 सहायक	09451287226
10.	श्री मनोज कुमार गुप्ता	वरि0 अभि0 सहायक	09369111154
11.	श्री शिव दयाल मिश्र	वरि0 अभि0 सहायक	09956758570
12.	श्री रामशंकर साहू	वरि0 अभि0 सहायक	09451223618
13.	श्री प्रदीप कुमार	अभि0 सहायक	07703008953
14.	श्रीमती दिव्या श्रीवास्तवा	अभि0 सहायक	09415181944
15.	श्री संतोष कुमार	अभि0 सहायक	09415481822
16.	श्री राजेश कुमार	अभि0 सहायक	09336478972
17.	श्री प्रवीन कुमार	वरिष्ठ तकनीशियन	09839465291
18.	श्री चंद्रमा सिंह	डीजल तकनीशियन	09935976652
19.	श्री जगपाल सिंह	तकनीशियन	09793779725
20.	श्री सुरेश चन्द्र	तकनीशियन	09450935614
21.	श्री फूल चन्द	तकनीशियन	09839989635
22.	श्री शिव कुमार	लेखाकार	08808267956
23.	श्री विनोद कुमार मिश्र	हिन्दी अनुवादक	09415391208
24.	श्रीमती विनीता शुक्ला	आशुलिपिक	09936004678
25.	श्री रामजी शुक्ला	प्र0 श्रेणी लिपिक	09415079934
26.	श्री सुनील कुमार	प्र0 श्रेणी लिपिक	09450935645
27.	श्रीमती मीना मिश्रा	प्र0 श्रेणी लिपिक	09450121327
28.	श्री मनमीत सिंह	प्र0 श्रेणी लिपिक	09838004246
29.	श्री विनोद कुमार सिंह	अ0 श्रेणी लिपिक	09305038392
30.	श्री गीतेश कुमार शर्मा	अ0 श्रेणी लिपिक	09450937255
31.	श्री देशराज गौतम	अ0 श्रेणी लिपिक	09839059159
32.	श्री लक्ष्मीकान्त पाठक	वाहन चालक	09936803599
33.	श्री रजनीश कुमार	वाहन चालक	08853397893
34.	श्री भँवर सिंह	एम.टी.एस.	07376800946
35.	श्री रमेश चन्द	एम.टी.एस.	08565886964
36.	श्री कुँवर सिंह	एम.टी.एस.	09026247787
37.	श्री ओम प्रकाश	एम.टी.एस.	

विज्ञापन प्रसारण सेवा आकाशवाणी कानपुर में आयोजित राजस्व अर्जन बैठक का स्मृति चित्र

विज्ञापन का सशक्त माध्यम

शुभवाणी • लाभवाणी • आकाशवाणी

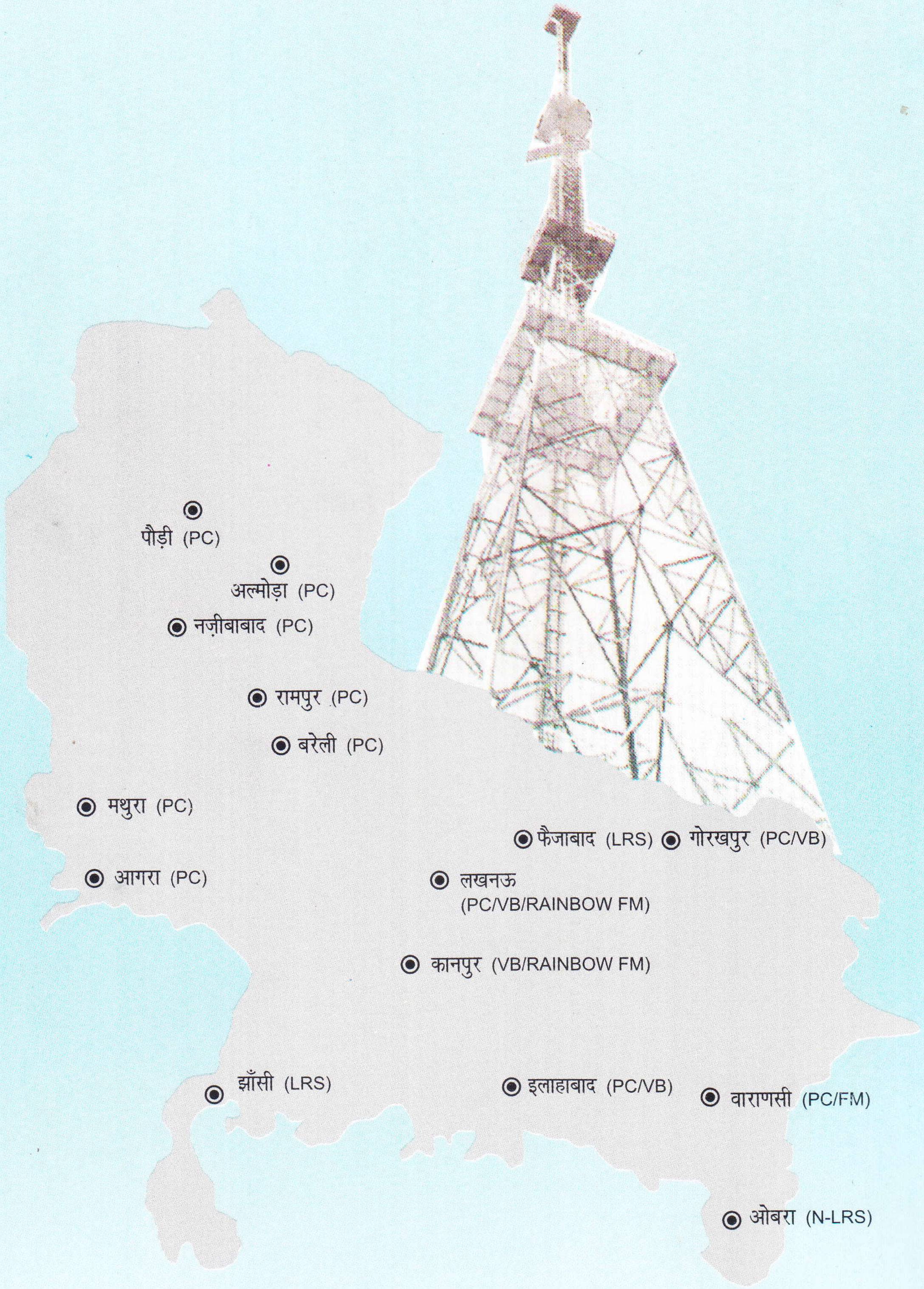

PC = प्राइमरी चैनल
LRS = एफ एम लोकल रेडियो स्टेशन
VB = विविध भारती
N-LRS = एफ एम नॉन लोकल रेडियो स्टेशन